चन्दामामा
दिसम्बर १९८७
2.50

No share prices,
no political fortunes, yet...

Over 40% of Heritage readers are professionals or executives, 61% from households with a professional / executive as the chief wage earner. Half hold a postgraduate degree or a professional diploma.

– from an IMRB survey conducted in Oct. 1986

It's an unusual magazine. It has a vision for today and tomorrow.

It features ancient cities and contemporary fiction, culture and scientific developments, instead of filmstar interviews and political gossip. And it has found a growing readership, an IMRB survey reveals. Professionals, executives and their families are reading The Heritage in depth – 40% from cover to cover, 42% more than half the magazine.

More than 80% of The Heritage readers are reading an issue more than once.

And over 90% are slowly building their own Heritage collection.

Isn't it time you discovered why?

THE HERITAGE

CMP-2155

So much in store, month after month.
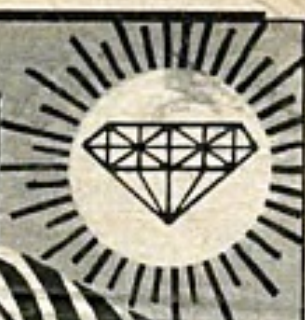
डायमंड कॉमिक्स
अब आप घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं!
तरीका बहुत आसान है।
इस माह के नये डायमंड कामिक्स
हनुमान महिमा
पिंकू और अंधा फकीर
राजन इकबाल और डाक्टर डान
फौलादी सिंह और पारस के चोर
अंकुर और नकली वारिस
अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें
और 5/- सदस्यता शुल्क डाक टिकट या
मनीआर्डर से भेज दें और हर महीने घर बैठे 4
डायमंड कामिक्स 20/- के स्थान पर 18/- में डाक
व्यय फ्री प्राप्त करें। यानि हर माह 2/- की छूट
और 5/- डाक व्यय भी माफ यानि घर बैठे
कामिक्स मिलेंगे। और डाक व्यय भी नहीं देना
होगा और 2/- की छूट अलग।
साथ ही मुफ्त पाइये पहेलियां ही पहेलियां
5/- का मनीआर्डर आते ही हम आप को सदस्य
बना लेंगे
और उपहार स्वरूप पहेलियां ही पहेलियां मुफ्त
भेज देंगे। आम के आम गुठलियों के दाम।
सदस्यता कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक का सदस्य बना लें सदस्यता
शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ
भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की
स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने
नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह
वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।
नाम ....
पिता का नाम ....
पता........................
डाकखाना........................
डायमंड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
Mediamind

चन्दामामा

दिसम्बर 1987

विषय-सूची

एक प्रति : २-५०

वार्षिक चन्दा : ३०-००

के नये सेट में पढ़िए

छः नए रोचक, हास्यप्रद, शिक्षाप्रद व सनसनीखेज़ कॉमिक्स

खूनी खोज (नागराज)

गूलर का फूल (खलील खां)

मौत की चिंगारियां (गगन)

मूर्ख ज़मींदार

दौलत बुरी बला

खूनी खिलौना

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से अपनी प्रति सुरक्षित कराएँ।

कॉमिक्स के अच्छे लेखक व आर्टिस्ट सम्पर्क करें।

प्रकाशकः राजा पॉकेट बुक्स १७/३६, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७

"तैयार, होशियार, करो फ़ायर!"
अंकल लियो ने कहा हमला करो. और हमने अपनी-अपनी बंदूकें उठाकर शुरू कर दिया फ़ायर. मैं लाया था अपनी ऑटो राइफ़ल और काउबॉय स्पेशल और विवेक के पास था फ़्लाइंग-सॉसर-गन और फ़नशूटर.
दन-दन-दन-दनादन... चलने लगी गोलियां. दुश्मन के पास थी बुल्स आय गन, मौज़र पिस्टल और रैट-ए-टैट. और वो पूरे ज़ोर से हमारी तरफ आ रहे थे.
ऐसे में रमेश का जंगल कमांडो बड़े काम आया, उसी ने हमें हार से बचाया. दुश्मन भाग खड़ा हुआ और हम जीत गए.
अंकल लियो की टोली में तुम भी शामिल हो सकते हो. अगर तुम्हारे पास लियो की खेल- बंदूकें नहीं तो जल्दी से ले आओ.
"खूब सारी हैं, सभी एक-से-एक प्यारी हैं."
मेरे पापा यही कहते हैं.
LEO
लियो खेल-बंदूकें! २१ रु. से ९९ रु. तक.
आओ खेलें!
LEO TOYS
LINTAS LEO 5 2116 H
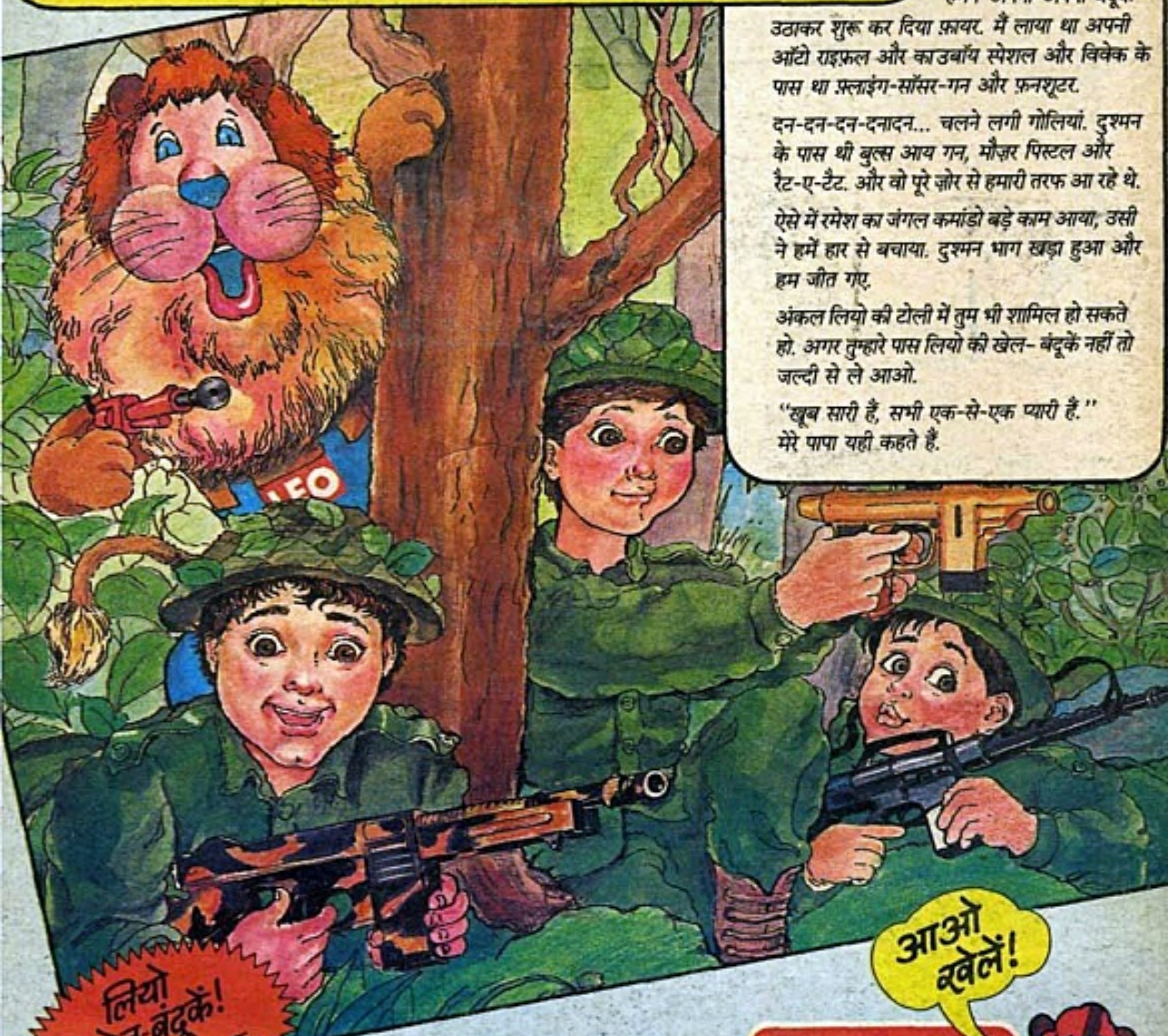
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

"ज्वाला द्वीप" धारावाहिक नवम्बर अंक में समाप्त हो चुका। नया धारावाहिक "सोने की घाटी" इस अंक से शुरू हो रहा है।

अन्य लोगों की आवश्यकता, उदारता एवं सरलता का लाभ उठाकर कुछ लोग विपरीत उपाय का आश्रय लेकर धन कमाने का प्रयत्न करते हैं जैसे कि 'रोगी और वैद्य' कहानी में।

अमर वाणी

जातस्य नदीतीरे तस्यापि, तृणस्य जन्मसाफल्यम्।
यत् सलिलमज्जनाकुल, जनहस्तालंबनं भवति ॥

[नदी किनारे उगे हुए तृण का जन्म सफल है, यदि वह जल-प्रवाह में डूबनेवाले व्याकुल मनुष्य के हाथ का सहारा बन जाती है। डूबते हुए मनुष्य के लिए तिनके का सहारा ही बहुत होता है।]

वर्ष : ४० दिसम्बर १९८७ अंक : ४

एक प्रति : २-५० :: वार्षिक चन्दा : ३०-००

खेल खिलौने कॉमिक्स और
रवि को चाहिए कुछ और
खुद ही सोचे, खुद ही बनाए
जिससे तबियत खुश हो जाए
एको पेन सेट उसने उठाया,
घर के ऊपर मोर बनाया,
डैडी की मूंछें, एक शिकारी
एक कबूतर, एक भिखारी.
एको हरे और एको पीले
लाल और ऑरेंज, भूरे, नीले
काले, बैंगनी, वायलेट, गुलाबी
अब तो स्केच पेन एको ही लें.
एको
स्केच पेन रंगों से यारी, मौज-मस्ती तुम्हारी!
प्रिसिज़न राइटिंग पॉइन्ट्स प्रा. लि. १८, सुभाष रोड, विले पारले (पूर्व), बम्बई-४०० ०५७.
फोन : ६०५०३०५, ६०४३५५६.
EKCO

'चन्दामामा' के संवाद

हित-अहित

मध्यप्रदेश के गब्दी नामक गाँव में बिजली के गिरने से एक बालक मर गया, पर बिजली के गिरने के कारण ही जन्म से ही गूंगा एक बालक बोलने लगा ।

कोशाध्यक्ष की कब्र

मिस्र के विख्यात फराह टुटुंकमन के नाम से लगभग सभी परिचित हैं। हाल ही में उसके कोशाध्यक्ष एवं पुरोहित मया की तथा उसकी पत्नी मेरीट की कब्र का पता लगा है। ऐसा माना जारहा है कि इस सुप्रसिद्ध कोशाध्यक्ष की कब्र में राज्य का ख़ज़ाना गड़ा हुआ हो सकता है ।

मास्को का सबसे ऊँचा वृक्ष

मास्को में 'भारत महोत्सव' के उद्घाटन के समय वहाँ के एक उद्यान में साल वृक्ष का एक पौधा रौंपा गया। ऐसा समझा जाता है कि यह पौधा १०० फुट की ऊँचाई तक बढ़ सकता है और इस तरह वह इस उद्यान के वृक्षों में सबसे अधिक ऊँचा वृक्ष प्रमाणित होगा ।

छिपा हुआ सैनिक

द्वितीय विश्व-युद्ध में भाग लेनेवाले कुस्मापंचनूको नाम के एक सत्तर वर्षीय सैनिक का उक्रेन के अधिकारियों ने हाल ही में पता लगाया है। उसने जर्मन सेनाध्यक्षों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था, इसलिए उसे डर था कि अगर वह पकड़ा गया तो उसे साईबेरिया भेज दिया जायेगा। इसी भय के कारण पंचनूको अपने घर के रसोई घर को छोड़ कभी बाहर नहीं निकला। उसने घर में ही छिपे रहकर ४२ वर्ष बिताये। उसके परिवार के लोग सबसे यही बताते आ रहे थे कि पंचनूको का देहान्त होगया है।

प्राचीन चरित्रः

जड़ भरत

महाराज भरत चक्रवर्ती जब वृद्ध होगये, तब उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्रों को सौंप दिया और स्वयं संन्यासी का जीवन व्यतीत करने के विचार से बन में चले गये। वहाँ जब वे स्नान कर रहे थे तो उन्होंने एक हिरण-शावक को देखा। उसकी मां मर चुकी थी। भरत को उस पर दया आयी। वे उसे अपनी कुटी में ले आये और अपनी संतान की तरह उसका पालन-पोषण करने लगे। हिरण शावक बड़ा होगया, पर भरत के मन का मोह कम न हुआ। उसके प्रति उनका वात्सल्य इतना अधिक बढ़ा कि उन्होंने उसका स्मरण करते हुए ह प्राण त्यागे। अपने इस जड़ प्रेम के कारण उन्होंने अगला जन्म हिरण के रूप में ही लिया। इस जन्म में उन्होंने हिरण के प्रति अपने अत्यधिक मोह का प्रायश्चित किया। जब इस हिरण की मृत्यु होगयी तो भरत ने एक ब्राह्मण के घर जन्म धारण किया।

पूर्व जन्म की स्मृतियों के कारण भरत संसार के प्रति अनासक्त रहे। उनकी अनासक्ति को लोगों ने उनकी मंदबुद्धि समझा और वे उनका तिरस्कार करने लगे। भरत की सौतेली मां उनके साथ दुर्व्यवहार करने लगी। इससे दुखी होकर भरत ने गृह-त्याग किया और संन्यासी बन गये।

भरत एक मार्ग से जारहे थे कि कुछ राजसेवकों ने उन्हें पकड़कर राजा की पालकी ढोने के काम में लगा दिया। पालकी ढोते समय भरत इस बात की पूरी सावधानी बरत रहे थे कि कहीं उनके पैरों के नीचे दबकर कोई कृमि-कीट न मर जाये। उनके इस आचरण से पालकी डोल जाती थी। राजा क्रुद्ध होकर भरत को लात मारने लगे। राजा की लातों को भरत शांति के साथ सहन करते रहे और उन्हें धर्मग्रन्थों एवं पुराणों का रहस्य सुनाते हुए आगे बढ़ते रहे। राजा चकित होकर पालकी से नीचे उतर आये और भरत के चरणों में गिर पड़े। भरत ने राजा के इस आचरण को अधिक महत्व न दिया और स्वयं बन में चले गये। वहाँ उन्होंने अपनी तपस्या और ज्ञान से मोक्ष प्राप्त किया। भरत अनेक विघ्न-बाधाओं, मान-अपमानों को सहन करते रहे और मुनि का अविचलित पद प्राप्त किया। अपनी इस स्थिरता के कारण ही उनका जड़ भरत नाम सार्थक हुआ।

रामनगर में दिवाकर नाम का एक संपन्न गृहस्थ रहता था। एक बार अचानक वह बीमार पड़ गया। उस नगर में शांतिधन वैद्य का अच्छा नाम था। उसने दिवाकर को दवा दी। वह पूर्ण स्वस्थ होगया।

दिवाकर के स्वस्थ हो जाने पर भी शांतिधन वैद्य ने दिवाकर से कहा, "आपकी बीमारी बड़ी सांघातिक है। मेरी दवा से तात्कालिक उपशमन हो गया है, पर यह बीमारी शीघ्र ही पुन उभर सकती है।"

"क्या इस बीमारी को फिर से उभरने से नहीं रोका जा सकता?" दिवाकर ने पूछा।

"क्यों नहीं। परन्तु एक माह तक विशेष औषधियों का सेवन करना होगा। फिर भी यह निश्चित नहीं है कि रोग निर्मूल होजायेगा। निरोग होना हमारे भाग्य पर निर्भर करता है।" वैद्य ने कहा

"भाग्य पर मेरा अधिक विश्वास नहीं है। आप चिकित्सा प्रारंभ कीजिए!" दिवाकर ने कहा।

वैद्य थोड़ी देर सोचकर बोला, "चिकित्सा के लिए काफ़ी धन व्यय होगा। पहले महीने में लगभग पच्चीस हज़ार रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी। दूसरे महीने में दस हज़ार। तीसरे महीने से अगले तीन माह तक प्रति माह पाँच हज़ार। इसके बाद पाँच महीने तक प्रति माह एक हज़ार रुपये खर्च आयेगा। इसीलिए मैं असमंजस में पड़ा हुआ हूँ।"

"इसका मतलब है दस महीनों में पचपन हज़ार रुपये। यह तो बहुत ही ज़्यादा रक़म है।" दिवाकर बोला।

"सेठ जी, आपने तो लाखों रुपये कमाये हैं। आप जैसे धनाढ्य के लिए स्वास्थ्य की ख़ातिर यह कोई बड़ी रक़म नहीं है। आप धन के

नहीं दे सकता ।"

"आप चिंता न कीजिए, मैं इस सम्बन्ध में आपके पुत्रों से बात करना चाहूँगा । उन्हें आपके शरीर से अवश्य मोह होगा ।" वैद्य ने कहा ।

"वैद्यजी, इधर वर्षों से मेरे बेटे ही व्यापार संभाल रहे हैं । मैंने अपनी सारी ज़मीन-ज़ायदाद और अन्य संपत्ति उन्हें दे रखी है । वे पिता के रूप में मेरा आदर करते हैं । इससे अधिक लाभ और मैं कुछ नहीं चाहता । मैं अभी इस क्षण नहीं कह सकता कि मेरे शरीर में धन कमाने की शक्ति है अथवा नहीं—पर इस माह से मैं पुनः व्यवसाय में रुचि लूँगा । यदि कुछ ही समय में मैंने पर्याप्त धन कमा लिया तो आपके इलाज से अवश्य ही मैं इस शरीर को बचा सकूँगा, अन्यथा मुझे इस शरीर के नष्ट होने की बहुत चिन्ता नहीं है । यदि आपने मेरे बेटों से मिलकर मेरी चिकित्सा की व्यवस्था की, तो भी मैं औषधियों का सेवन नहीं करूँगा ।" दिवाकर बोला ।

"सेठजी, आप मेरी बात को हवा में न उड़ाइये । मैं आपको चेतावनी दे रहा हूँ, अगर आपने तत्काल चिकित्सा न करवायी तो आप अधिक दिन जीवित नहीं रह सकते । यदि आप धनार्जन में लग जायेंगे तो चिकित्सा का समय निकल जायेगा और नुकसान उठाना पड़ेगा ।" वैद्य शांतिधन ने सारी स्थिति स्पष्ट कर दी ।

"यदि आपके अन्दर यह विश्वास है कि आप अपनी चिकित्सा से मुझे जीवित रख सकते हैं, तो आप अभी से इलाज शुरू कर दीजिए । मैं

लालच में हाथ न खींचिएगा ।" वैद्य शांतिधन ने समझाकर कहा ।

दिवाकर मुस्करा कर बोला, "यह बात सत्य है कि मैंने अपनी बुद्धिमत्ता से पर्याप्त धन कमाया है, पर हम लोग जितना ठाठ-बाट दिखाते हैं, अन्दर की वास्तविकता कुछ और होती है । इधर कुछ दिनों से हमारा व्यापार घाटे में चल रहा है । जितना पैसा है, लगभग उतना ही कर्ज़ा है । हम विचार कर रहे थे कि एक वर्ष तक हमें थोड़ी सावधानी से व्यय करना है कि इस बीच मैं बीमार पड़ गया । अब मैं साठ वर्ष का होगया हूँ । मेरे जीवित रहने से मेरे बच्चों का कोई बहुत बड़ा उपकार होनेवाला नहीं है । अब प्राण बचें या न बचें, मैं अपने शरीर का मूल्य पचपन हज़ार रुपये

आपको इस उपकार के लिए छह माह के पश्चात् एक लाख़ रुपये दूँगा ।" दिवाकर ने कहा ।

"एक लाख रुपये! क्या आप छह माह के अन्दर इतना धन कमा सकेंगे ?" शांतिधन ने चकित होकर पूछा ।

"आप जैसे साधारण वैद्य यदि दस माह में पचपन हज़ार रुपये कमा सकते हैं तो एक सफल व्यापारी होने के नाते क्या मैं छह माह में एक लाख रुपया नहीं कमा सकता ?" दिवाकर ने उलटकर सवाल किया ।

वैद्य शांतिधन ने उसी दिन से दिवाकर की चिकित्सा प्रारंभ कर दी। एक माह व्यतीत होगया वैद्य ने दिवाकर से कहा, "सेठजी, मैं नहीं जानता कि इस अवधि में आपने कितना रुपया कमाया है, पर अगर आप मुझे दस हज़ार रुपये दे दें, तो बड़ी सुविधा हो जाये ।"

"वैद्य जी, छह माह तो होने दीजिए, मैं आपको इकट्ठा एक लाख रुपया दे दूँगा ।" दिवाकर ने कहा ।

"लेकिन, सेठजी! मेरे घर में कई ज़रूरतें आ पड़ी हैं । छह माह तक रुकना मेरे लिए संभव नहीं होगा ।" वैद्य ने कहा ।

"आप अगर चाहें तो अपनी ज़रूरतों के बारे में बतायें, मैं उनका हल बता देता हूँ ।" दिवाकर ने कहा ।

"जब मैंने अपनी बड़ी बेटी कमला की शादी की थी तो मैं अपने वचन के मुताबिक़ दहेज़ के दस हज़ार रुपये न दे सका था । उसे जीवन भर

अपनी ससुरालवालों के ताने सुनने पड़े । अब उसकी बेटी विवाह के योग्य हो चुकी है । वह मुझसे विनती कर रही है कि अगर मैं वह पुराना कर्ज़ चुका दूँ तो उसे अपनी बेटी के हाथ पीले करने में आसानी हो जाये ।" वैद्य बोला ।

"यह कौन-सी बड़ी बात है ? आपके चंद्रमणि का लड़का दीपक अब विवाह योग्य हो चुका है । आप कमला की बेटी का रिश्ता उससे कर दीजिए और दहेज मत लीजिए !" दिवाकर ने सलाह दी ।

"मैं भी यही चाहता था, पर मेरी बहू अपने बेटे के लिए दहेज माँगती है । वे लोग अब मेरे घर में नहीं हैं । हमारा अलगाव हो चुका है ।" वैद्य ने अपनी मुसीबत बतायी ।

"बस, इतनी सी बात ! आप सबसे कह

"सेठजी, मेरी पत्नी गहने गढ़वाने को कहती है। एक लाख रुपये प्राप्त होने की बात सुनकर सब अपनी-अपनी असाधारण इच्छाएं प्रकट कर रहे हैं। कर्ज़दार हमारे घर का चक्कर लगा रहे हैं। उनका कर्ज़ पाँच हज़ार रह गया है।" वैद्य बोला।

"वैद्यजी, मुझे ऐसा लगता है कि आप अपनी आमदनी से अधिक ख़र्च करते हैं। आपने अपने भविष्य के बारे में भी कुछ सोचा है? मान लिया मैं आपको अभी एक लाख़ रुपये दे देता हूँ। उसमें से चंद्रमणि अवश्य ही कुछ धन ले लेगा। आपकी पत्नी गहने गढ़वा लेगी। आपका मकान थोड़ा और बड़ा हो जायेगा। आप अपने कर्ज़ भी चुका देंगे इसके बाद भी तो आप ज़िन्दा रहेंगे न? उस समय आप क्या करेंगे?" दिवाकर ने पूछा।

दिवाकर की बातें सुनकर वैद्य दुखी होकर बोला, "सच कहते हैं सेठ जी! मेरा छोटा बेटा सूर्यमणि कभी अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाता। वह अत्यन्त खर्चीला और लापरवाह है। मेरी पत्नी का समर्थन उसे प्राप्त है।"

"तब तो आप केवल वैद्यक से अपना परिवार नहीं चला सकते। आपको मुझ जैसे रोगी भी सदा प्राप्त नहीं होंगे। इसलिए आप अपने छोटे पुत्र सूर्यमणि को व्यापार में लगा दीजिए! अगर उसे धन कमाने का चस्का लग गया, तो वह अपने आप सुधर जायेगा।" दिवाकर ने समझाया।

दीजिए कि मैं आपको छह माह बाद एक लाख रुपया देने वाला हूँ। आपके बेटे-बहू तुरन्त आपके साथ रहने चले आयेंगे।" दिवाकर ने सुझाया।

इसके दो दिन बाद वैद्य शांतिधन बड़े उत्साह के साथ दिवाकर के घर पहुँचा और बोला, "सेठजी, आपने जो कहा था, वैसा ही हुआ। चंद्रमणि बहू-बच्चों सहित मेरे साथ रहने आगया है मेरी बहू भी कमला की बेटी को अपनी बहू बनाने के लिए तैयार होगयी है।"

दिवाकर सब सुनकर मुस्कराता रहा।

एक महीना और बीत गया। वैद्य ने दिवाकर से पुनः धन के लिए कहा।

"वैद्यजी, इस बार आप पर कौन-सी विपदा आगयी है?" दिवाकर ने पूछा।

"सेठ जी, मुझे भय है कि अगर मैंने उसे व्यापार में लगा दिया तो वह मूलधन भी खा जायेगा ।" वैद्य ने कहा ।

दिवाकर धीमे से हँस कर बोला, "आपका पुत्र सूर्यमणि आवारा या मनचला नहीं है । आप एक काम कीजिए! रत्नसेन को मैं जानता हूँ । वह एक ग़रीब युवक है और सूर्यमणि का मित्र है । रत्नसेन मेहनती और बुद्धिमान है । आप अपनी सबसे छोटी बेटी सरला का विवाह उसके साथ कर दीजिए और उसे घर जमाई बनाकर अपने साथ रख लीजिए! सूर्यमणि और रत्नसेन को एकसाथ कोई व्यापार करवा दीजिए, वे अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे ।"

"आपका कथन सचमुच ही मान्य है, पर व्यापार के लिए पूंजी चाहिए न ! कम से कम मूलधन के रूप में ही, थोड़ी-सी राशि तो दे दीजिए ।" शांतिधन वैद्य ने माँग की ।

"वैद्य जी, अपके घर पचास बोरे धान पड़ा हुआ है और दो सौ नारियल हैं । आप उन्हें नारायणपुर की हाट में ले जाइये । थोड़े रुपये भले ही खर्च हो जायें, पर आप चिंता न करें । वहाँ आपको दुगुना मूल्य प्राप्त होगा । यदि यह व्यापार लाभदायक रहा तो सूर्यमणि और रत्नसेन को सलाह दीजिए कि अन्य लोगों से माल ख़रीदकर नारायणपुर में बेचते रहें । मुझे पूरी आशा है कि रत्नसेन इस काम को अच्छी तरह संभाल लेगा ।" दिवाकर ने भलीप्रकार समझा कर कहा ।

दस दिन बाद शांतिधन वैद्य बड़ा प्रसन्न होकर दिवाकर के पास आया और बोला, "आपकी वाणी सत्य प्रमाणित हुई । सूर्यमणि को यह काम बहुत पसन्द आया और अब वह रत्नसेन के साथ इसे बढ़ाना चाहता है ।"

एक महीना और बीत गया । वैद्य ने दिवाकर से पुनः धन की माँग की ।

दिवाकर मंद-मंद मुस्कराकर बोला, "वैद्य जी, आप समझ ही गये होंगे कि मैं दिये हुए वचन की अवधि से पहले आपको धन न दूँगा । फिर आप मुझसे बार-बार क्यों धन माँगते हैं ? आपको धन का बहुत लालच है । जो लालची होता है, वह कभी संतुष्ट नहीं होता । असंतुष्ट को सुख का अनुभव नहीं होता और असुखी कभी धन नहीं कमा सकता ।"

"मेरे पास धन नहीं होगा तो मेरे पत्नी-पुत्र भी मेरा आदर-सम्मान नहीं करेंगे। इसीलिए मैं आपसे धन माँग रहा हूँ।" वैद्य ने कहा।

"अगर हमारे कुटुम्बी या रिश्तेदार धन के कारण हमारा आदर करते हैं तो वे हमारे परिजन कहलाने के योग्य नहीं हैं। ऐसे लोगों के लिए धन कमाना व्यर्थ है। वैद्य होने के नाते आपका फ़र्ज़ है कि आप अन्य लोगों की सहायता करें। अनेक लोग आपका आदर करेंगे, गुण के कारण, धन के कारण नहीं।" दिवाकर ने सलाह दी।

एक और महीना बीत गया। वैद्य ने दिवाकर से कहा, "सेठ जी, आपकी हर बात सत्य प्रमाणित हुई है। मैं थोड़े से धन से अधिक लोगों की चिकित्सा कर रहा हूँ। गरीबों से तो मैं इलाज का खर्च तक नहीं लेता हूँ। गाँव के सब लोग मेरा आदर करते हैं। यह देख मुझे बड़ा सुख मिलता है। पर मेरे अपने लोग आपसे मिलने वाले एक लाख़ रुपयों की प्रतीक्षा में हैं।"

"यह विचार तो ख़तरे से ख़ाली नहीं है। आप अपने लोगों से कह दीजिए कि मैंने आपको धोख़ा दिया है और रुपये नहीं दे रहा हूँ। यह जानकर भी जो लोग आपका साथ देंगे, वे ही आपके सच्चे रिश्तेदार हैं। यदि सब लोग आपको छोड़कर चले जायें तो मैं आपको जो धन दूँगा, उसमें से एक पैसा भी आप किसी को देने का विचार न करें!" दिवाकर ने सुझाव दिया।

"सेठ जी, ऐसी हालत में मेरा अपना कहनेवाला कोई नहीं रहेगा।" शांतिधन ने कहा।

"देखिये, वैद्य जी, आपकी बेटी के दहेज़ का कर्ज़ चुक गया है। बिना दहेज़ के छोटी पुत्री के लिए एक योग्य तथा समर्थ वर मिल गया है। आवारा माना जानेवाला आपका पुत्र व्यापार में जम गया है। अब आपके सामने कोई समस्या नहीं है। ऐसी स्थिति में यदि आपके रिश्तेदार आपसे दूर भी होजायें तो आपका क्या नुक़सान है? गाँव के लोग आपको दिल से मानते हैं।" दिवाकर बोला।

शांतिधन वैद्य ने दिवाकर के धोखा देने और एक लाख रुपया न मिलने की बात को केवल अपने परिवार वालों को बताया। वैद्य की पुत्रवधू क्रोधित हो उठी और उसने अपनी बहू को मायके भेजने की धमकी दी। पर चंद्रमणि का लड़का दीपक अपनी पत्नी को बहुत प्रेम करता था।

उसने अपने माता-पिता से साफ़ कह दिया कि ऐसी कोई घटना होने पर वह भी अपनी पत्नी के साथ बाहर निकल जायेगा । यह समस्या इसप्रकार सुलझ गयी । चंद्रमणि ने भी यही कहा कि सारे गाँव का आदर पाने वाले पिता से अलग होने में बदनामी ही है । फिर भी सबके मन में वैद्य के लिए शिकायत थी । सारा कुनबा इस बूढ़े को कोस रहा था ।

एक और माह व्यतीत होगया । इस बार दिवाकर ने वैद्य को बुलाया और स्पष्ट शब्दों में कहा, "वैद्य जी, मैं आज स्पष्ट बता देता हूँ, मैं अपनी चिकित्सा के लिए आपको एक पाई भी न दूँगा । आप यह दोषारोपण मुझ पर न लगाना कि मैंने आपको धोखा दिया है ।"

वैद्य शांतिधन अवाक रह गया । उसने पूछा, "क्या सचमुच आप मुझे दग़ा देना चाहते हैं ?"

"दग़ा मैंने नहीं दी, आपने मुझे दग़ा दी है । मैं एक साधारण रोग का शिकार हुआ था और आपकी दवा से ठीक भी हो गया था । पर उसके बाद आपने मुझे भीषण रोग से ग्रस्त बताकर खूब धन ऐंठना चाहा । पर मैं एक बुद्धिमान मनुष्य हूँ । मुझे मूर्ख बनाना इतना आसान काम नहीं था । इसीलिए मैंने भी आप को झूठा प्रलोभन दिया ।" दिवाकर ने कहा ।

"सेठ जी, आपको सच ही प्राणान्तक रोग था यह तो मेरी औषधियों का प्रभाव है कि आज आप स्वस्थ नज़र आरहे हैं ।" वैद्य ने कहा ।

दिवाकर ने कुछ शीशियां वैद्य को देकर कहा, "आपने जो औषधियां मुझे दी थीं, वे सब ये रहीं । मैंने एक भी औषधि का उपयोग नहीं किया है ।"

वैद्य शांतिधन का चेहरा उतर गया । वह दबे हुए स्वर में बोला, "सेठ जी, जब आप जानते थे कि मैं आपको झूठमूठ रोगग्रस्त बना रहा हूँ, तो आप आज तक मुझे इस भ्रम में क्यों डाले रहे कि आप मेरी औषधियां ले रहे हैं ?"

दिवाकर खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "मैं जानता हूँ कि आप भले आदमी हैं । आपने मुझसे पचपन हज़ार रुपये वसूलने की कोशिश की । इसका मतलब है कि आपको धन की बड़ी आवश्यकता थी । ऐसा भी हो सकता है कि परिवारवालो ने आपकेअन्दरलालचपैदा करदिया हो । यही कारण है कि मैं अक्सर आपसे आपकी

निजी समस्याओं के बारे में पूछा करता था। प्रत्येक व्यक्ति लालच में पड़कर दूसरों को लूटने में अपनी समस्या का हल खोजता है। वास्तव में समस्याएं बड़ी नहीं होतीं, पर हमारा लालच उन्हें बड़ा बना देता है। ऐसा व्यक्ति न स्वयं सुखी होता है और न ही किसी और को सुखी बना पाता है"

दिवाकर के प्रति वैद्य के हृदय में इन महीनों में पर्याप्त श्रद्धा होगयी थी। आज तो मानो उसकी आँखें खुल गयीं। उसने दिवाकर के सामने हाथ जोड़े और बोला, "सेठ जी, आज तक मैं आपको रोगी और अपने को वैद्य मानता था। पर आज मुझे पता लगा कि.वास्तव में रोगी मैं हूँ। आपने मेरी अद्भुत चिकित्सा की है। इस लाभ के लिए मैं आपको लाखों रुपये भी दे दूँ तो कम है। मैं आपका ऋणी हूँ।"

दिवाकर मुस्कराकर बोला, "आप इस सत्य को समझ गये, यही मेरे हर्ष का विषय है। मैं एक आत्मविश्वासी और विचारशील व्यक्ति हूँ। मैं प्रारंभ में ही समझ गया था कि आप एक साधारण आर्थिक स्थिति के गृहस्थ हैं। बहुमूल्य दवाओं को तैयार करने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है। आप कैसे इन दवाओं का निर्माण कर सकते थे, जबकि आप स्वयं अपना हाथ ख़ाली बता रहे थे ? मैंने उसी समय यह भी समझ लिया था कि आप मुझसे धन वसूलने के लिए ही मुझे विषम रोगग्रस्त बता रहे हैं। कृपया आप भविष्य में किसी को यों ही रोगग्रस्त मत बताइयेगा। यदि कोई दुर्बल हुआ तो आपकी बात को सच मानकर मानसिक रोग का शिकार हो जायेगा और जो रोग उसे नहीं है, उसका रोगी बन जायेगा। मानव जीवन में धन से बढ़कर महान वस्तु मानवता है। यदि आप इस बात को भली भाँति समझ लेंगे तो धन स्वयं आपके पीछे दौड़ा आयेगा।" यह कहकर दिवाकर ने वैद्य को दस हज़ार रुपये उपहार स्वरूप दिये।

वैद्य शांतिधन और भी अधिक लगन से लोगों की चिकित्सा करने लगा। वह न केवल सबके अत्यधिक आदर का पात्र बना, बल्कि धन भी स्वयं उसके पास आने लगा।

सोने की घाटी

यह कहानी कई हज़ार वर्ष पहले की है, जब ऊँचे पहाड़ों और घने जंगलों के बीच सोने की घाटी नाम का एक राज्य था। उन पहाड़ों के पीछे एक और ऊँची पर्वतमाला थी। उसे कुछ अत्यधिक ऊँचे पर्वत मंडलाकार घेरे हुए थे। वहाँ के वृक्ष दूर से ऐसे दिखाई पड़ते थे, मानो मेघों के समुद्र में तैर रहे हों।

उस राज्य की प्रजा अपने आपमें बड़ी सुखी थी। वहाँ के लोग अपने कामों को बड़ी लगन और मेहनत से करते थे और जो कुछ प्राप्त होता था, उसमें संतुष्ट रहते थे। लेकिन कुछ लोगों को सुख प्राप्त नहीं था और वे संतुष्ट भी नहीं थे। उनके हृदय लालसा से भरे थे। वे थे उस देश के राजा और उसके दरबारी अधिकारी।

राजा का नाम शूरसेन था और वह दूसरों की बुद्धि के सहारे चलनेवाला मनुष्य था। राजा शूरसेन ने प्रजा के सुख एवं कल्याणकारी कार्यों की व्यवस्था करने के लिए कुछ लोगों को नियुक्त किया। ये लोग उसकी चापलूसी करने वाले स्वार्थी लोग थे। उन लोगों ने एक सभा का आयोजन किया और उसमें यह निर्णय लिया—राजा का कल्याण ही देश का कल्याण है—राजा का सुख ही देश का सुख है। राजा शूरसेन को उनका यह निर्णय अपूर्व प्रतीत हुआ। उसने प्रसन्न होकर उनकी 'ज्ञानी' उपाधि में परिवर्तन किया और उन्हें 'महाज्ञानी' उपाधि प्रदान की।

इस घटना के बाद महाज्ञानियों ने एक समारोह किया और उसमें यह प्रस्ताव पारित किया कि महाराजा शूरसेन को यों तो सारी सुख-सुविधाएं प्राप्त हैं, लेकिन उनके जीवन में

मनोज दास

मनोरंजन का अभाव है, इसलिए आज से हमारे राजगायक शीर्षासन मुद्रा में अपना गायन प्रस्तुत किया करेंगे। सब यह देख सुनकर स्तब्ध और अवाक रह गये। विवश होकर गायकों को इसी भाँति संगीत प्रस्तुत करना पड़ा। इस दृश्य को देखकर राजा शूरसेन हँसते-हँसते दोहरे होगये।

राजा शूरसेन और उसके राज-पदाधिकारी चाहे जैसे भी क्यों न हों, पर उसकी प्रजा में उद्वेग नहीं था। उसमें सहज शांति थी। पर प्रजा के मन में कोई दुख भी अवश्य था। लोग जब भी दुर्ग के पीछे की पर्वतमाला को देखते, उनके मुख से आह निकल जाती। उस स्वर्ण-पर्वत के नाम पर ही उस राज्य का नाम सोने की घाटी पड़ा था।

जनता के बीच एक पुरातन कथा कही-सुनी जाती थी। उसके अनुसार इस पर्वत में एक स्थान पर कभी एक बहुत ही बड़ी सोने की ख़ान थी। इसलिए यह पूरा इलाक़ा सोने की घाटी नाम से मशहूर था। किसी समय उस पर शुद्धोधन नाम के एक गुणी एवं धर्मात्मा राजा ने राज्य किया था महाराज शुद्धोधन न केवल एक महान चित्रकार थे, बल्कि उच्च कोटि के शिल्पी भी थे। वे प्रायः ध्यानमग्न हो जाते थे। उसी अवस्था में उन्हें यह संकेत मिला था कि सोने की खान कहाँ है।

महाराज शुद्धोधन ने स्वर्ण से एक अनुपम सुंदर नारी की प्रतिमा का निर्माण किया था। इस अद्भुत कलाकृति को गढ़ने के बाद उन्होंने राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया था कि किसी शुभ मुहूर्त में राज्य की समस्त प्रजा को इस प्रतिमा के दर्शन का अवसर प्रदान किया जायेगा। लेकिन तभी उनके दुष्ट मंत्री मणिभद्र ने षडयंत्र रचा और सारे राज्य में ख़लबली मच गयी।

मंत्री मणिभद्र को सोने की खान का पता लग गया था। उसने राजा शुद्धोधन को मारकर सोने की घाटी के राज्य पर क़ब्जा करना चाहा। उसने पड़ोसी देश रजतगिरि के राजा शैलेशचंद्र के साथ साठगांठ की और एक दिन रात को अचानक दुर्ग पर आक्रमण करवा दिया। युद्ध आरंभ होगया। दुर्ग के रक्षक शत्रु-सेना का सामना करने लगे।

इसी दौरान एक विचित्र घटना घटित हुई। अकस्मात् पृथ्वी में कंप उत्पन्न हुआ और दुर्ग के पीछे का पर्वत फ़ट गया। पर्वत की शिलाएं दुर्ग पर आ गिरीं और दुर्ग ध्वस्त होगया। दुर्ग के सभी

सैनिक शत्रु-सेना सहित मृत्यु के शिकार होगये। मंत्री मणिभद्र अपने सहयोगियों के साथ वहीं दफ़न होगया।

सूर्योदय हुआ। शिल्पी राजा शुद्धोधन अपनी कलाकृति उस स्वर्ण-प्रतिमा के साथ कहाँ ग़ायब होगये, कोई न जान सका। प्रजा के मन में अनेक शंकाएं थीं—एक विचार यह भी था कि राजा वन में चले गये हैं और वह स्वर्णप्रतिमा शिलाओं के नीचे कहीं दब गयी है।

इस घटना के कुछ वर्ष बाद सर्वत्र ऐसी चर्चा होने लगी कि निकटवर्ती अरण्य में एक मुनि का आवास है और उन मुनि की शक्ल सूरत राजा शुद्धोधन से मेल खाती है। पर किसी को यह साहस नहीं हुआ कि उन मुनि से भेंट कर शंका का समाधान कर ले। प्रजा में एक विचार यह भी फैला कि महाराज शुद्धोधन क़िले के जलप्रपात से बड़ी गुफा पार करने के बाद संभवतः लंबी यात्रा करके समुद्र की ओर चले गये हैं। सबने जलप्रपात और उसके पीछे विद्यमान गुफा के बारे में बहुत कुछ कहा-सुना, पर किसी ने भी उस दिशा में जाने का कष्ट नहीं उठाया। सबके मन में न केवल शंका, बल्कि इस बात का विश्वास था कि यदि किसी ने जलप्रपात और गुफा को पार करने का दुस्साहस किया तो वह जीवित नहीं लौट सकता।

युद्ध के परिणामस्वरूप सोने की घाटी वाला राज्य दुष्ट मंत्री मणिभद्र के सहायक रजतगिरि राज्य के राजा शैलेशचंद्र के अधीन हो गया।

शैलेशचंद्र में सोने की घाटी के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति तो आकर्षण था ही, पर वहाँ पर प्राप्त होनेवाले स्वर्ण के प्रति लालच विशेष रूप से था शैलेशचंद्र ने रजतगिरि का राज्य तो अपने भाई दीपचंद्र को दिया और स्वयं सोने की घाटी का राज्य ले लिया। वह इसी राज्य में चला आया और उसने अपने लिए एक नये राजमहल का निर्माण भी करवा लिया।

भूकंप के कारण ध्वस्त हुए राजा शुद्धोधन के क़िले और महल धीरे-धीरे पूरी तरह उजाड़ होगये वहाँ पेड़, पौधे, झाड़—झंखाड़ उगते चले गये लोग उस प्रदेश में जाने से भय खाने लगे। उस प्रदेश के बारे में यह अफवाह फैल गयी कि वहाँ न केवल रात में, बल्कि दिन में भी भूत-प्रेतों का

संचार होता है। पहले कभी इतना सुरम्य वह स्थान ज़हरीले साँपों, बाघों और भालुओं का निवास-स्थान बन गया।

पर आश्चर्य की बात तो यह थी कि जयराज नाम का एक युवक उस प्रदेश में निर्भय विचरण किया करता था। बचपन में ही उसकी माता का स्वर्गवास होगया था। उसका पिता शेषराज वास्तुशिल्प का अच्छा कारीगर था। वह अपने धंधे में इतना अधिक व्यस्त रहता था कि उसे अपने बेटे की कोई चिंता न थी। इस कारण जयराज और भी स्वतंत्र होगया था और अत्यन्त स्वच्छन्दतापूर्वक उन भयंकर खंडहरों में घूमा करता था। उसे इन प्रदेशों में अपार सौन्दर्य के दर्शन होते थे। कभी-कभी उसका सामना भूखे बाघों और ज़हरीले सर्पों से हो जाता, पर वह युक्तिपूर्वक अपनी रक्षा कर लेता था।

एक दिन अकस्मात् पश्चिमी दिशा में लालिमा छा गयी। वायु स्तंभित होगयी। सैकड़ों जंगली जानवर गर्जना करने लगे। कुछ ही देर में आंधी आयी और सारा वन-प्रदेश तड़-तड़ ध्वनि करने लगा।

खेतों में काम कर रहे कृषक और रास्तों पर चल रहे लोग भय-कंपित हो भागने लगे। सारी घाटी में भयानक स्वर उठा। सोने की घाटी का पुरातन भाग भूकंप के आघात से छिन्न-भिन्न होगया। विस्फोट के कारण शिलाएं उछलकर राजा के क़िले पर गिर पड़ीं और क़िले का मुखद्वार टूटकर भयानक ध्वनि करता हुआ धराशायी होगया। राजा शूरसेन घबरा गया। उसने तत्काल अपने सभासद महाज्ञानियों को बुलवा लिया। जब महाज्ञानी लोग राजा के समक्ष उपस्थित होगये तो उसने क्रुद्ध होकर कहा, "यदि मेरे दुर्ग का मुख द्वार धराशायी होगया है तो उसका निर्माण करने वाले कारीगरों के सिर भी मिट्टी में लोटने चाहिए।"

तब मंत्री मार्तण्ड ने निवेदन किया, "महाराज! इस क़िले एवं राजमहल को बनाने वाले कारीग़र अब जीवित नहीं हैं। वे काल-कवलित हो चुके हैं।"

"तो क्या हुआ? उनके वंशज तो जीवित होंगे। यदि उधार लेनेवाला व्यक्ति मर जाता है तो उसके पुत्रों को उसका हिसाब चुकाना पड़ता है।

क्या मैं मूर्ख हूँ?" राजा शूरसेन ने कहा

"महाराज! हम तो केवल महाज्ञानी हैं, पर आप तो महा महाज्ञानी हैं !" मंत्री मार्तण्ड बोला।

जयराज के दादा शिवराज ने उस क़िले के निर्माण में शिल्पी की हैसियत से अपना सहयोग दिया था। वही उस समय का प्रमुख वास्तुकला विशेषज्ञ था। राजा की आज्ञा से राजसेवकों ने जयराज के पिता शेषराज शिल्पी को बन्दी बनाकर राजा के सामने उपस्थित किया।

"इसका सिर काट डालो!" राजा शूरसेन ने हुक्म दिया।

तब विश्वेश्वर नाम के एक महाज्ञानी ने विनयपूर्वक निवेदन किया," महाराज, इतने विशाल क़िले के मुखद्वार के धराशायी होने के बदले में इस आदमी का छोटा-सा सिर काटना सही दंड नहीं कहलायेगा।" विश्वेश्वर के मन में शेषराज शिल्पी के लिए आदर का भाव था।

"तब क्या करना चाहिए? तुम्हारी क्या सलाह है?" राजा शूरसेन ने पूछा।

"महाराज! इस आदमी को एक हज़ार वर्ष के कारावास का दंड दीजिए।" विश्वेश्वर ने कहा।

"वाह, एक हज़ार वर्ष का दंड ! यह तो अद्भुत है।" राजा ने तालियां बजाकर कहा।

इसप्रकार शेषराज कारागार में डाल दिया गया यह अन्याय देख जयराज व्याकुल हो उठा। पिता के अलावा उसका अपना कहनेवाला और कोई नहीं था। ऐसा अत्याचारपूर्ण कठोर दंड देनेवाला राजा शूरसेन की उसने भरी सभा में निंदा करनी चाही। पर उसके शुभचिंतकों ने उसे समझा-बुझाकर रोक दिया। उन्होंने उसे शांत करते हुए कहा, "जय, यदि तुम क्रोध के वशीभूत होकर राजा की निंदा करोगे तो तुम्हारी भी वही हालत होगी जो तुम्हारे पिता की है। तुम आवेश में मत आओ ! हम सब तुम्हारे पिता को कारागार से मुक्त करने का प्रयत्न करेंगे।"

लेकिन शेषराज कारागार में एक वर्ष भी न काट सका। दुख और यंत्रणा के कारण वह शीघ्र ही परलोक सिधार गया।

शेषराज की मृत्यु का समाचार सुनकर राजा शूरसेन ने अपने मंत्रियों से कहा, "देखते हो न ? वह अपराधी नौ सौ निन्यानवे वर्ष का दंड भोगे बिना चला गया।"

तब महाज्ञानियों में से एक ने कहा,

वह बड़ी आसानी से खंडहरों के पास पहुँच गया और एक बड़ी शिला पर बैठ गया। इस शिला पर जयराज अक्सर बैठा करता था। तभी चंद्रोदय हुआ और सारे बन में चांदनी छिटक गयी। जयराज बड़ी देर तक अपने पिता को याद कर रोता रहा। कुछ देर बाद उसे नींद आगयी।

अभी उसे सोये हुए अधिक समय नहीं हुआ था कि उसकी आँखें खुल गयीं। उसने देखा सामने अद्‌भुत प्रकाश व्याप्त है। वह चंद्रमा का प्रकाश नहीं था। किसी अन्य चीज़ का प्रकाश था। इससे पहले जयराज ने उस स्थान पर ऊबड़-खाबड़ शिलाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखा था।

पर आज इस समय उसे उस प्रदेश में एक गुफा दिखाई दी। उस गुफा के अन्दर अत्यन्त देदीप्यमान एक आकृति खड़ी थी। जयराज उठ कर खड़ा होगया। उसने गुफा के समीप जाकर देखा, गुफा के भीतर एक नारी की स्वर्ण प्रतिमा खड़ी है और उसके हाथ में एक स्वर्णकमल निर्मित किया गया है। इस अद्‌भुत कलाकृति को देखकर जयराज के आश्चर्य की सीमा न रही।

दूसरे ही क्षण जयराज को स्मरण हो आया कि कुछ दिनों पहले ही उसने सोने की घाटी के बारे में एक कथा सुनी थी जिसमें एक शिल्पी राजा शुद्धोधन और उसके द्वारा निर्मित एक स्वर्ण प्रतिमा का वर्णन आया था। जयराज को विश्वास होगया कि यह स्वर्ण प्रतिमा अवश्य ही उसी राजा की कलाकृति है।

"महाराज, मेरा एक सुझाव है। पिता की संपत्ति के लिए यदि पुत्र वारिस बन सकता है तो वह उसके अधूरे दंड के भुगतान का वारिस क्यों नहीं बन सकता ?"

"वाह, महाज्ञानी! वाह तुमने खूब कहा। उस मृत शेषराज के पुत्र को तत्काल पकड़ कर कारागार में डाल दिया जाये।" राजा ने आदेश दिया।

जयराज के पास इस आदेश का समाचार तुरंत पहुँच गया। वह राजसैनिकों के आने से पहले ही जंगल की ओर चला गया।

जंगल के निकट पहुँचते तक रात हो चुकी थी। चारों तरफ़ घना अंधकार छाया हुआ था। फिर भी जयराज को डर नहीं लगा। वह वहाँ के झाड़-झंखाड़ों के बीच चलने का अभ्यस्त था।

जयराज उस प्रतिमा की ओर निर्निमेष नेत्रों से देखने लगा। उसे महसूस हुआ कि उसने इसके पूर्व भी उस प्रतिमा को कहीं देखा है। पर वह अपनी इस शंका पर विश्वास नहीं कर सका। जब से सोने की घाटी पर राजा शैलेशचंद्र और उसके वंशजों का अधिकार हुआ, तबसे राज्य में कलाओं के लिए कोई स्थान नहीं रह गया था। यह नया राजा शूरसेन तो अत्यन्त मूर्ख और अन्यायी था।

जयराज ने आगे बढ़कर प्रतिमा का स्पर्श किया। उसे उस स्पर्श में अकथनीय आनन्द मिला। जयराज ने अत्यन्त तन्मय भाव से उस प्रतिमा के हाथ में स्थित कमल पुष्प पर अपना हाथ रखा। उस समय बड़े अप्रत्याशित रूप से प्रतिमा की उंगली की एक अंगूठी फिसलकर उसकी उंगली में आगयी।

जयराज उस अंगूठी को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसे अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति हुई। वह प्रतिमा को एकटक देखता हुआ वहीं ज़मीन पर बैठ गया। दूसरे ही क्षण नशे की तरह सम्मोहक कोई वस्तु उसके भीतर चली गयी।

जयराज अभी तंद्रिल अवस्था में था कि उसे एक आवाज़ सुनाई दी। किसी ने बड़े चुनौती के स्वर में उससे पूछा, "क्या तुम इस सुन्दर स्वर्ण प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठित होने के रहस्य को जानना चाहोगे ?"

"हाँ, अवश्य जानना चाहूँगा।" जयराज ने आनन्द विह्वल होकर उत्तर दिया।

"अच्छा! सबसे पहले तुम प्रतिमा की सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध करो! इसके बाद तुम जलप्रपात के पीछे विद्यमान गुफा में प्रवेश करना। गुफा को पार करने के बाद तुम एक सर्वथा नये प्रदेश में प्रवेश करोगे। वहाँ तुम्हें एक देवी के दर्शन होंगे। उस देवी से तुम्हें प्राण-प्रतिष्ठा के रहस्य का पता लगेगा। प्राण-प्रतिष्ठा के बाद जब स्वर्ण प्रतिमा सजीव नारी रूप में प्रत्यक्ष हो जाये, तब तुम उससे विवाह करने के लिए देवी से वर माँगना।" अज्ञात कंठ स्वर ने कहा

(क्रमशः)

गंधर्व के शाप

दृढ़व्रती विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आये, वृक्ष से शव उतार उसे कंधे पर डालकर हमेशा की भाँति मौन श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में वास करनेवाले बेताल ने कहा, "राजन, अर्धरात्रि के समय इस श्मशान में अनेक कष्ट झेलते हुए आप अपने निर्णय पर डटे हुए हैं। आपका साहस प्रशंसनीय है। मैं ऐसा मानता हूँ कि हर कार्य लगन के द्वारा साधा जा सकता है। फिर भी कई बार साधा हुआ कार्य स्वहित अथवा परहित में काम नहीं देता और निष्फल हो जाता है। इस संदर्भ में मैं आपको चित्रवर्ण नाम के एक ऐसे गंधर्व की कहानी सुनाता हूँ, जिसके पास अनेक अद्भुत शक्तियां एवं महिमाएं थीं, फिर भी वह उनके उपयोग में सर्वत्र सफल नहीं हो सका। आप श्रम भुलाने के लिए सुनिये !"

बेताल कहानी सुनाने लगाः चित्रवर्ण नाम का एक गंधर्व था। एक बार उसने कुछ गंधर्वों के मुख से पृथ्वीलोक के सौन्दर्य के बारे में सुना।

बेताल कथा

पृथ्वी के सौन्दर्य को प्रत्यक्ष रूप से देखने की कामना हृदय में रखकर वह गंधर्व लोक से निकल पड़ा ।

आकाश मार्ग से पृथ्वी लोक की ओर यात्रा करते समय चित्रवर्ण को एक स्थान पर एक सुंदर उद्यान दिखाई पड़ा । वह उस उद्यान में विहार करने की इच्छा से एक लता-निकुंज के पास उतर पड़ा ।

चित्रवर्ण उद्यान की अनुपम सौन्दर्य-छटा पर मुग्ध होकर चारों तरफ विस्फारित नयनों से वहां की रमणीयता का आनन्द लूटने लगा । तभी उसकी दृष्टि एक स्थान को लक्ष्य कर ठहर गयी। वहाँ कुछ युवतियों के बीच सौंदर्य की प्रतिमा स्वरूप एक युवती शोभायमान थी । गंधर्व चित्रवर्ण ने ऐसा चमत्कारी सौंदर्य कभी गंधर्वलोक में भी नहीं देखा था ।

चित्रवर्ण उस युवती के सौंदर्य पर मोहित होकर उन युवतियों के पास गया । उस एकान्त राजोद्यान में एक तरुण को अकस्मात् उपस्थित देखकर सभी युवतियाँ आश्चर्यचकित हो उठीं । चित्रवर्ण ने तारकों में चंद्र की भाँति शोभायमान उस सुन्दर युवती को सम्बोधन कर कहा, "हे सुंदरी! मैं चित्रवर्ण नाम का गंधर्व हूँ । तुम्हारे सदृश अनुपम सुन्दर तरुणी गंधर्व लोक में भी दुर्लभ है । तुम कौन हो, मैं तुम्हारा परिचय प्राप्त करने के लिए उत्सुक हूँ ।"

उस विशिष्ट युवती की सखी दीपशिखा ने चित्रवर्ण के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, "ये पूर्णचंद्रपुर राज्य की राजकुमारी प्रियंका हैं ।"

"आह, इनका नाम भी अत्यन्त सुन्दर है । मैं तुम्हारी राजकुमारी को अपने गंधर्वलोक में लेजाऊँगा ।" यह कहकर चित्रवर्ण ने राजकुमारी प्रियंका का हाथ पकड़ लिया ।

राजकुमारी भयभीत हो ज़ोर से चीख उठी । राजकुमारी की रक्षा में नियुक्त एक राजसैनिक बलभद्र दौड़कर वहाँ आया और उसने गंधर्व से लड़ने के लिए अपनी तलवार खींच ली ।

सैनिक के इस बाल-प्रयास को देखकर चित्रवर्ण खिलाखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "मूर्ख, तुम नहीं जानते मैं कौन हूँ । इसीलिए मुझसे लड़ने के लिए तुमने अपनी तलवार उठायी है । यह व्यर्थ का प्रयास न करो !"

"मैं राजकुमारी की रक्षा में नियुक्त सैनिक हूँ। तुमने राजकुमारी का हाथ पकड़ उनका अपमान किया है, मैं अवश्य ही तुम्हें बन्दी बनाऊँगा। तुम देव हो या दानव या अन्य कोई, इससे मेरा कोई मतलब नहीं है।" सैनिक बलभद्र ने कड़ककर कहा।

सैनिक की यह बात सुनकर गंधर्व चित्रवर्ण भी क्रुद्ध हो उठा। उसने सैनिक को शाप दिया, "अरे नीच मानव! मैं अद्भुत शक्तियों का स्वामी गंधर्व हूँ। तुमने मुझ पर तलवार उठायी है, इसलिए मैं तुम्हें शाप देता हूँ, तुम लूले बन जाओ!"

पर सैनिक बलभद्र पर चित्रवर्ण का शाप निष्फल होगया। बलभद्र ने क्रोध के आवेश में गंधर्व चित्रवर्ण के कंठ पर वार करने का प्रयास किया, पर गंधर्व राजकुमारी का हाथ छोड़कर विद्युत् की कौंध के सदृश अदृश्य होगया।

शक्तिसंपन्न एक गंधर्व का शाप एक साधारण से मनुष्य पर निष्फल होगया, चित्रवर्ण को इस बात का अत्यन्त आश्चर्य हुआ। पर शीघ्र ही वह इस बात को भूल गया और कुछ दूर तक यात्रा करके संध्या के समय एक वन में पहुँचा। उसे कुछ दूर पर एक पहाड़ी गुफ़ा के भीतर से प्रकाश की किरणें फूटती दिखाई दीं। चित्रवर्ण को जिज्ञासा हुई और वह उस प्रकाश का कारण जानने के लिए गुफा-के मुख के निकट पहुँचा। उसने देखा, गुफा के अन्दर बीचो बीच एक प्रकाशमान मणि लटक रही है।

चित्रवर्ण ने ऐसी अपूर्व कान्ति प्रसारित करने वाले रत्न को पहले कभी नहीं देखा था। उसने मन ही मन उस रत्न को प्राप्त करने का संकल्प किया और सोचा कि वह इस अनमोल रत्न को गन्धर्व राजा को उपहार में देगा।

तभी पीछे से एक भयंकर स्वर सुनाई दिया, "कौन है यह दुस्साहसी, जो गुफा के भीतर प्रवेश करना चाहता है।"

चित्रवर्ण ने देखा एक भीषण आकृति का राक्षस पीछे खड़ा था। उसने चित्रवर्ण की ओर क्रोधभरी दृष्टि डालकर पूछा, "तुम कौन हो? मेरी गुफा के भीतर किस काम से जाना चाहते हो?" चित्रवर्ण तनिक भी विचलित नहीं हुआ और बोला, "मैं गंधर्व चित्रवर्ण हूँ। अद्भुत प्रकाश

फेंकनेवाला यह रत्न मुझे आकर्षित कर रहा है। मैं इसे लेने के लिए ही गुफा के भीतर जाना चाहता हूँ ।''

"किसी और की संपत्ति को लूटने का तुम्हें क्या हक़ है? डाकुओं के सदृश दुष्ट वृत्ति रखने वाले तुम्हें मैं जीवित नहीं छोड़ सकता। मैं तुम्हें अभी इसी क्षण अपना ग्रास बनाता हूँ।'' यह कहकर राक्षस चित्रवर्ण की ओर बढ़ा ।

चित्रवर्ण खिलखिलाकर हँस पड़ा, फिर बोला, "अरे अधम राक्षस! मैं अद्‌भुत शक्तियों का स्वामी हूँ। तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। यदि मैं चाहूँ तो तुम्हें मृतप्राय कर सकता हूँ। यदि तुम अपनी प्राण-रक्षा चाहते हो तो इस रत्न को मुझे सौंपकर मुझ से क्षमा मांगो !''

गंधर्व की बातें सुनकर राक्षस उत्तेजित हो उठा और क्रोध के कारण गरजकर बोला, "चोर होकर मेरे सामने ड़ींग मारते हो ? मैं अभी तुम्हें अपनी मुट्ठी में भीचकर तुम्हारी हड्डियों का चूरा बना देता हूँ।'' यह कहकर राक्षस चित्रवर्ण पर टूट पड़ा।

पर चित्रवर्ण राक्षस की पकड़ से बचकर झट हवा में ऊपर उड़ा और बोला, "अरे दुष्ट राक्षस! मैं तुझे शाप देता हूँ, तेरे अन्दर प्राण तो रहेंगे, पर तू मिट्टी के एक खिलौने के रूप में परिवर्तित हो जायेगा ।''

लेकिन राक्षस पर गंधर्व के शाप का कोई प्रभाव न पड़ा। चित्रवर्ण को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। क्या उसकी शक्तियों नष्ट होगयी हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि पृथ्वी लोक के निवासियों पर उसकी शक्तियां काम न देती हों ?

उसी वन में गंधर्व चित्रवर्ण कुछ दूर और

आगे बढ़ा । उसने देखा एक जगह एक बूढ़ा आदमी प्यास के मारे तड़प रहा है । चित्रवर्ण ने आसपास पानी की खोज की, पर उसे कहीं पानी न दिखाई दिया ।

तभी उसने देखा कि एक मुनि वृक्ष के नीचे बैठा तपस्या कर रहा है और उसके समीप में ही जल से भरा कमंडलु रखा है । चित्रवर्ण मुनि के निकट गया और हाथ जोड़कर बोला, "मुनिवर, पास ही में एक बूढ़ा आदमी प्यास के कारण तड़प रहा है । क्या आप मुझे अपने कमंडलु का थोड़ा सा जल दे सकते हैं ?"

मुनि का ध्यान भंग हुआ । ध्यान टूटने से वह क्रुद्ध हो उठा और चित्रवर्ण की ओर क्रोधभरी दृष्टि डालकर बोला, "अरे दम्भी । तुमने मुझे पुकार कर मेरी तपस्या को खंडित किया है, मैं तुम्हें अभी उचित दंड देता हूँ ।" यह कहकर मुनि ने कमंडलु का जल अपनी अंजलि में भर लिया ।

चित्रवर्ण ने अत्यन्त विनीत होकर मुनि से प्रार्थना की, "महात्मा! आप क्रोध मत कीजिए ! प्यास से तड़प रहे एक वृद्ध मनुष्य की प्राणरक्षा करने के लिए ही मुझे आपका ध्यान भ ंग करना पड़ा ।"

"कारण उचित हो अथवा अनुचित, तुमने मेरा तप भंग किया है, तुम्हें दंड भोगना ही पड़ेगा ।" यह कहकर मुनि ने कमंडलु का जल चित्रवर्ण पर छिड़क कर ये शाप-वचन कहे, "तुम्हारी वाणी नष्ट होजाये, तुम गूंगे बन जाओ !"

लेकिन मुनि का शाप चित्रवर्ण पर कोई प्रभाव न डाल पाया । मुनि के इस आचरण से चित्रवर्ण भी अत्यन्त कुपित हो उठा । उसने अपने दायें

हाथ को हवा में लहराकर मुनि को शाप दिया, "हे मुनि, तुम इसी क्षण एक शिला बन जाओ!"

दूसरे ही पल वह मुनि शिला के रूप में परिवर्तित होगया ।

बेताल ने अपनी कहानी समाप्त कर कहा, "राजन, महान शक्तियों से संपन्न गंधर्व चित्रवर्ण का शाप न तो एक साधारण योद्धा को प्रभावित कर सका और न एक राक्षस का ही कुछ बिगाड़ सका। क्या उस सैनिक और राक्षस में कोई ऐसी शक्ति अथवा महिमा थी कि गंधर्व की शक्ति निष्फल होगयी और एक तपस्वी मुनि उसकी शक्ति के प्रभाव से शिला बन गया। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं ? यदि आप इस संदेह का समाधान जानकर भी न करेंगे आपका सिर फूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने उत्तर दिया, "गंधर्व चित्रवर्ण ने अपनी महान शक्तियों का उपयोग तुच्छ स्वार्थ के लिए करना चाहा था। उसने बलपूर्वक राजकुमारी का अपहरण करने का प्रयत्न किया और राजकुमारी की रक्षा में नियुक्त राजसैनिक को शाप दिया। इसीलिए उसका शाप व्यर्थ होगया। इसी भाँति वह गुफा-रत्न एक राक्षस का था। उस दिव्य मणि को चुराने का निषेध करनेवाले उसके स्वामी को ही गंधर्व शाप दे बैठा। यह कार्य धर्मसंगत नहीं। इसीलिए चित्रवर्ण का शाप राक्षस का अनिष्ट न कर पाया। पर उसी गंधर्व का शाप एक तपस्वी मुनि के ऊपर पूरी तरह से फलीभूत हुआ। क्योंकि वास्तवमें चित्रवर्ण दया और करुणा से प्रेरित होकर एक वृद्ध की निस्वार्थ भाव से सहायता करना चाहता था। किंतु मुनि किंचित् भी द्रवित नहीं हुआ और गंधर्व के प्रति क्रुद्ध हो उठा। यही कारण है कि इस स्थल पर गंधर्व का शाप पणिामकारी सिद्ध हुआ। राजसैनिक एवं राक्षस में कोई विशेष शक्ति नही थी, पर उनका पक्ष नीतियुक्त था, इसलिए गंधर्व उनका कुछ भी न बिगाड़ सका।"

राजा के इस प्रकार मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)
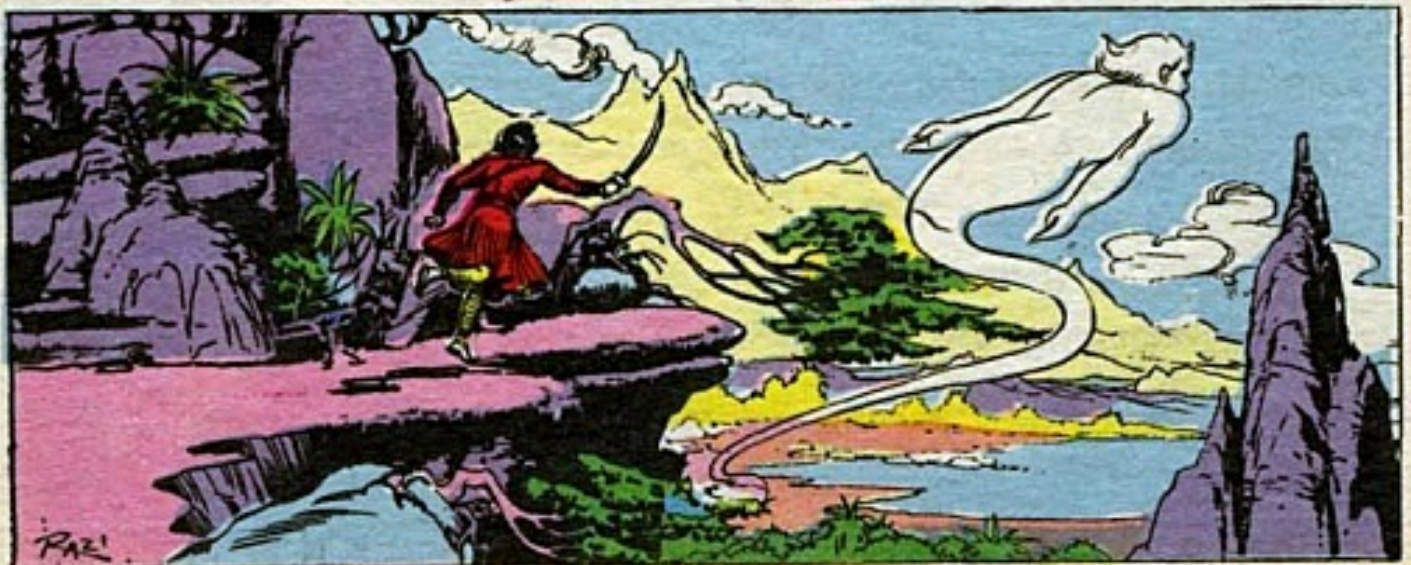
पद की रक्षा

उस समय कोसल देश पर राजा शैलेंद्र वर्मा का शासन था। एक दिन वे अपने दरबारी विदूषक शकट से किसी कारणवश रुष्ट होगये। उन्होंने क्रुद्ध होकर आदेश दिया, "शकट, तुम भविष्य में कभी अपना मुख मुझे न दिखाना !"

शकट के दुर्भाग्य का अंत यहीं नहीं हुआ। उसी दिन विदर्भ देश से दामोदर नाम का एक विदूषक आया और उसने राजा का मन मोह लिया। शकट पर तो वे क्रुद्ध थे ही, उन्होंने तत्काल यह निर्णय कर लिया कि राजविदूषक शकट के स्थान पर दामोदर को राजविदूषक पद दिया जाये।

अपने इस निर्णय के बारे में राजा शैलेंद्रवर्मा ने मंत्री मंगलशास्त्री से परामर्श किया।

मंगलशास्त्री ने कहा, "महाराज! इससे पहले भी अनेक बार शकट से आप रुष्ट हुए हैं, पर आपने उसका विदूषक पद नहीं छीना, क्योंकि वह अपनी चमत्कारपूर्ण विनोदोक्तियों से कुछ ही देर में आपका रोष शांत कर आपको प्रसन्न कर देता था। इसलिए मेरा सुझाव यह है कि उसे एक अवसर और दिया जाये।"

राजा शैलेंद्रवर्मा ने कोई उत्तर न दिया।

इसके पश्चात् मंत्री मंगलशास्त्री ने शकट को बुलाकर राजा के निर्णय के बारे में बताया और कहा, "शकट, अब अपने पद की रक्षा स्वयं ही कर सकते हो !"

दूसरे दिन राजा एवं मंत्री राजमंत्रणा कर रहे थे कि शकट एक काला नक़ाब ओढ़कर वहाँ आया और बोला, "महाराज, अपने आदेश दिया था कि मैं आपको अपना मुख न दिखाऊँ। इसलिए मुझे विवश होकर नक़ाब का सहारा लेना पड़ा। पर आपने मुझे बोलने से मना नहीं किया था, इसीलिए मैं कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे मालूम हुआ है कि महाराज मेरा पद विदर्भ देश के

शान्ति मलहोत्रा

विदूषक दामोदर को सौंपना चाहते हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप मुझे विदूषक पद से वंचित न करें, मैं बहुत समय से आँपके राजाश्रय में हूँ।"

शकट को नक़ाब में देखकर राजा शैलेंद्रवर्मा ने अपनी हँसी पर किसी तरह नियंत्रण कर कहा, "शकट, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि विदर्भ देश से आया हुआ दामोदर सब प्रकार से हमारे राजविदूषक पद के योग्य है। फिर भी, यदि तुम्हें अपने पद को बचाने की इच्छा है तो मैं तुम्हें एक अवसर और दे सकता हूँ।"

"धन्य महाराज! आप आज्ञा दीजिए, इसके लिए मुझे क्या करना होगा?" शकट ने पूछा।

"सुनो! कल राजसभा में तुम्हें दामोदर की प्रशंसा करनी होगी और कहना होगा कि ऐसा विदूषक सारे विश्व में दूसरा नहीं है। पर इसके लिए यह आवश्यक है कि तुम अपनी कोई निंदा भी न करोगे। यदि अपनी प्रगलभतापूर्ण वार्ता में सफल होगये तो तुम्हारे पद की रक्षा हो जायेगी।" राजा शैलेंद्रवर्मा ने कहा।

दूसरे दिन राजसभा में शकट ने दामोदर की प्रशंसा करते हुए कहा, "महाराज! दामोदर की समता कर सके, ऐसा विदूषक अन्यत्र दुर्लभ है। यदि आप मुझ जैसे विलक्षण प्रतिमा-संपन्न महान विदूषक के स्थान पर अन्य किसी व्यक्ति को विदूषक पद पर नियुक्त करना चाहते हैं तो दामोदर से अधिक योग्य व्यक्ति असंभव है।"

राजसभा के सभी सदस्य शकट की बाता का मर्म न समझ पाने के कारण विस्मय-विमूढ़ होगये। वे यह नहीं जान सके कि आज अचानक ऐसा कौन-सा प्रसंग उपस्थित होगया है कि शकट महाराज के सामने इस प्रकार की बातें कर रहा है

राजा शैलेंद्रवर्मा ने शकट की वाक् चातुर्यपूर्ण उक्ति पर तालियां बजायीं और कहा, "शकट का स्थान सदा शकट के लिए ही सुरक्षित रहेगा। इसके बाद उन्होंने राजसिंहासन से उतर कर शकट का आलिंगन किया। इसके उपरान्त राजा शैलेंद्रवर्मा ने विदर्भ से आये विदूषक दामोदर का सम्मान किया और उसे विदा कर शकट को बहुमूल्य उपहार दिये।

बच्चों के लिए चन्दामामा की मनोरंजक प्रतियोगिता

बम्पर विभाग

बम्पर पुरस्कार जीतिये !

पहला बम्पर : १०००० रू० की छात्रवृत्ति*

दूसरा बम्पर : ५००० रू० की छात्रवृत्ति*

तीसरा बम्पर : २५०० रू० की छात्रवृत्ति*

***५ समान वार्षिक किश्तों में**

२२० सान्त्वना पुरस्कार—एक वर्ष के लिए निःशुल्क चन्दामामा अप्रेल १९८८ से

कैसे भाग लें

यहाँ पूछे गये समस्त प्रश्नों के उत्तर आपको चन्दामामा के सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर १९८७ के अंकों में मिलेंगे। इन चारों अंकों को इकट्ठा कीजिए और उत्तरों के लिए इन्हें ध्यान देकर पढ़िये। साथ में दर्शायी गयी छह तस्वीरों में से हर एक के नीचे एक प्रश्न दिया गया है। दिये गये स्थान पर हर प्रश्न के उत्तर को साफ़-साफ़ लिखिये।

आगे, अगले पृष्ठ में वाक्य-पूर्ति कीजिये — "भारत की एक भव्य परम्परा है और इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए चन्दामामा एक सर्वोत्तम माध्यम है क्यों कि ...." अतिरिक्त केवल १५ शब्दों का प्रयोग कीजिये। अपने उत्तर को अधिक से अधिक मौलिक और रोचक बनाइये। याद रखिये, पुरस्कार विजेता केवल वही लोग होंगे जिनके सारे उत्तर सही होंगे और जिनकी वाक्य-पूर्ति सर्वोत्तम होगी।

अपना नाम, पता और आयु भरिये तथा प्रतियोगिता १, २ और ३ से लिये गये कूपनों को प्रवेश-पत्र पर यथास्थान चिपका दीजिए। इसके बाद पृष्ठ काटिये और अपनी प्रविष्टि हमें भेज दीजिए!

प्रतियोगिता के नियम

१. यह प्रतियोगिता १६ वर्ष की आयु तक के सभी बालकों के लिए है। एक बालक कितनी भी प्रविष्टियाँ भेज सकता है, किंतु वे चन्दामामा में मुद्रित प्रवेश-पत्र पर ही होनी चाहिएं।
२. प्रविष्टियां सुपाठ्य रूप से भरी जानी चाहिए और वे ११ भाषाओं में से किसी भी भाषा में हो सकती हैं जिसमें चन्दामामा प्रकाशित होता है।
३. बम्पर विभाग की प्रविष्टियां हमारे पास जनवरी ३१, १९८८ तक पहुँच जानी चाहिएं।
४. प्रविष्टियों के विलम्ब के लिए, उनके खोने और नष्ट होजाने के लिए प्रबन्धक उत्तरदायी नहीं होंगे।
५. प्रविष्टियां साधारण डाक से ही भेजी जानी चाहिए।
६. **प्रतियोगिता चन्दामामा प्रकाशन, हिन्दुस्तान थौमसन ऐसोसिएट में सेवारत और उनके परिवार के सदस्यों के अलावा सभी भारतीय** नागरिकों के लिए खुली है। ७. प्रविष्टियों का निर्णय एक स्वतंत्र निर्णायक समिति के द्वारा होगा, जिसका निर्णय अंतिम माना जायेगा। किसी भी पत्राचार पर विचार नहीं किया जायेगा। ८. चन्दामामा में विजेताओं की घोषणा होगी और उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी डाक द्वारा सूचना दी जायेगी।

आवश्यक :

चन्दामामा के सितम्बर, अक्तूबर और नवम्बर अंकों में प्रकाशित चन्दामामा प्रतियोगिता १,२ और ३ में मुद्रित बम्पर विभाग कूपनों को बम्पर विभाग के लिए भरी गयी प्रविष्टियों के साथ भेजना चाहिए। काट कर निकाले गये इन तीनों कूपनों को दिये गये स्थान पर चिपका दीजिए। बिना कूपनों के भेजी गयी प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जायेगा।

बम्पर विभाग

(प्रवेश पत्र)

हर तस्वीर के नीचे दिये गये ख़ानों में प्रश्नों के उत्तर दीजिए। बड़े अक्षरों में साफ़-साफ़ लिखिये।
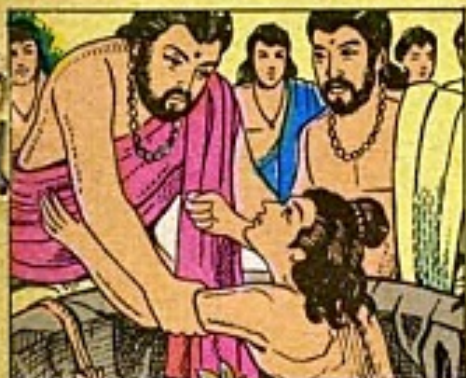
* वह किशोर बालक कौन था जो कुएं में गिरने के बाद एक ज्ञानी मुनि बन गया

निशाकर

* उस नवयुवक का नाम बतायें जिसने राजकुमार शौर्यपाल के पिता को पराजित कर राजकुमारी अनन्तलक्ष्मी से विवाह किया ?

* प्राचीन भारत के कौन से नगर में नरसिंह की प्रतिमा विद्यमान है?

* वह जापानी बालक कौन था जिसने एक डाइन से उसकी जादू का घास का कुरता लेने की चतुराई दिखाई ?

* यह राजा व्यर्थ ही अपनी ताक़त की डींग हांक रहा है। यह कौन है ?

* वह युवा कवि कौन था जिसे ब्रह्मराक्षस की प्रशंसा में गीत न गाने के लिए कष्ट उठाना पड़ा ?

कूपन १ यहाँ पर चिपकाइये सितम्बर अंक से

कूपन २ यहाँ पर चिपकाइये अक्तूबर अंक से

कूपन ३ यहाँ पर चिपकाइये नवंबर अंक से

(प्रवेश पत्र)

अब 'क्योंकि' शब्द के बाद १५ अतिरिक्त शब्दों से अधिक का प्रयोग न कर इस वाक्य को पूरा कीजिए...

भारत की एक भव्य परम्परा है और इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए चन्दामामा एक सर्वोत्तम माध्यम है क्योंकि ....

....

....

....

नाम : .... पता ....

आयु : ....

....

....

यह पृष्ठ काटिये और अपनी प्रविष्टि तुरन्त इस पते पर रवाना कर दीजिए :

चन्दामामा प्रतियोगिता बम्पर विभाग
चन्दामामा प्रकाशन
188 आर्काट रोड
मद्रास-600 026

प्रविष्टि की अन्तिम तिथि : **३१ जनवरी १९८८**

हमारे देश के स्मारक

मांडू

ई० सन् १६१८ में मुगल बादशाह जहाँगीर ने मांडू प्रदेश के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर लिखा था—"हरी दूब तथा रमणीय पुष्पों से व्याप्त मांडू पर्वत की सुन्दर घाटियों का वर्णन मैं किन शब्दों में करूँ?" मध्यप्रदेश के इस सुंदर स्थल पर १३ वीं शताब्दी में परमार राजाओं ने एक क़िले का निर्माण करवाया था और उसका नाम 'मंडप दुर्ग' रखा था। वही कालक्रम में मांडू बन गया।
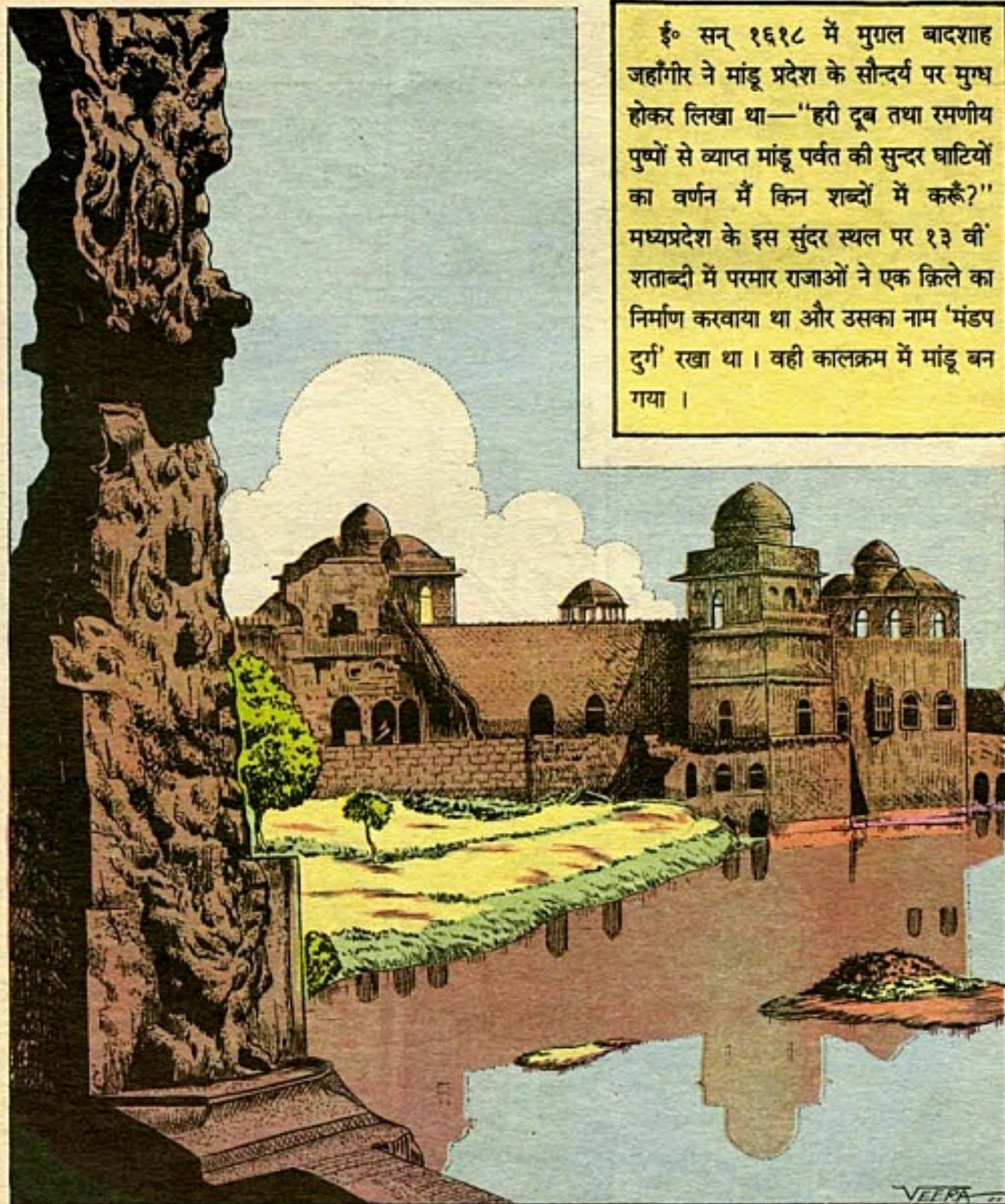
ऐसी एक कथा है। एक बार एक किसान ज़मीन खोद रहा था, तब उसके फावड़े से एक पत्थर टकराया और वह फावड़ा स्वर्ण बन गया। किसान उस पत्थर की महिमा के रहस्य को न समझ सका, पर एक लुहार ने उस पत्थर की महिमा को समझ लिया और वह किसान से उस पत्थर को माँगकर ले गया।

उस पत्थर की महिमा से अपार स्वर्ण बनाकर अल्प काल में ही वह लुहार धनकुबेर बन गया। कुछ समय बाद उसने वह पत्थर जयसिंह देवराज को दिया। कहा जाता है कि उस पत्थर से प्राप्त स्वर्ण से ही देवराज ने उस दुर्ग का निर्माण करवाया।

कुछ समय बाद राजा जयसिंह भी उस पत्थर की महिमा से प्राप्त स्वर्ण से संतुष्ट होगये। एक दिन उन्होंने नर्मदा तट पर एकत्रित जनता में अपने सारे धन को बांट दिया। स्वर्ण और रत्न पाकर प्रजा परम आनन्दित हुई। अंत में एक पुरोहित की बारी आयी। राजा ने उसे वह महिमान्वित पत्थर भेंट किया। राजा उस पुरोहित को उस पत्थर की महिमा समझाना ही चाहते थे कि पुरोहित ने पत्थर की भेंट से क्रोधित होकर उस पत्थर को नदी में फेंक दिया।

इस प्रकार वह महिमान्वित पत्थर सदा के लिए नर्मदा नदी की संपत्ति बन गया। कालान्तर में राजा के द्वारा निर्मित दुर्ग भी कालकवलित होगया। जब बाजबहादुर मालवा का शासक बना, तब यहाँ के कुछ महलों का पता लगाया गया और उनकी मरम्मत करवायी गयी। मालवा की एक युवती रूपमती से बाज बहादुर ने प्रेम किया रूपमती और बाजबहादुर संगीत के प्रेमी थे तथा स्वयं भी महान संगीतज्ञ थे। इनका गायन एक गाथा बन गया है।

बाजबहादुर रूपमती के साथ विवाह करना चाहता था। तब रूपमती ने अपने हृदय की बात प्रकट कर कहा था, "मैं अपने को नर्मदा की कुमारी मानती हूँ। उस नदी में स्नान किये बिना मैं एक दिन भी नहीं बिता सकती।" पर नर्मदा को पहाड़ पर कैसे ले जाया जाये? इस समस्या को सुलझाने के लिए बाज बहादुर ने गहरी भावना के साथ नदी माता की प्रार्थना की।

एक रात बाज बहादुर ने एक स्वप्न देखा। उस स्वप्न में नर्मदा नदी ने प्रकट होकर उससे कहा, "इसी पर्वत पर एक इमली का पेड़ है, तुम उसके नीचे खोदो, मैं चश्मे के रूप में प्रकट हो जाऊँगी।"

बाजबहादुर ने वैसा ही किया। इमली वृक्ष के नीचे एक श्वेत चश्मा ऊर्ध्वमुखी हो प्रवाहित होने लगा। वहाँ एक कुंड बन गया है जो आज भी 'रेवाकुंड' नाम से विख्यात है।
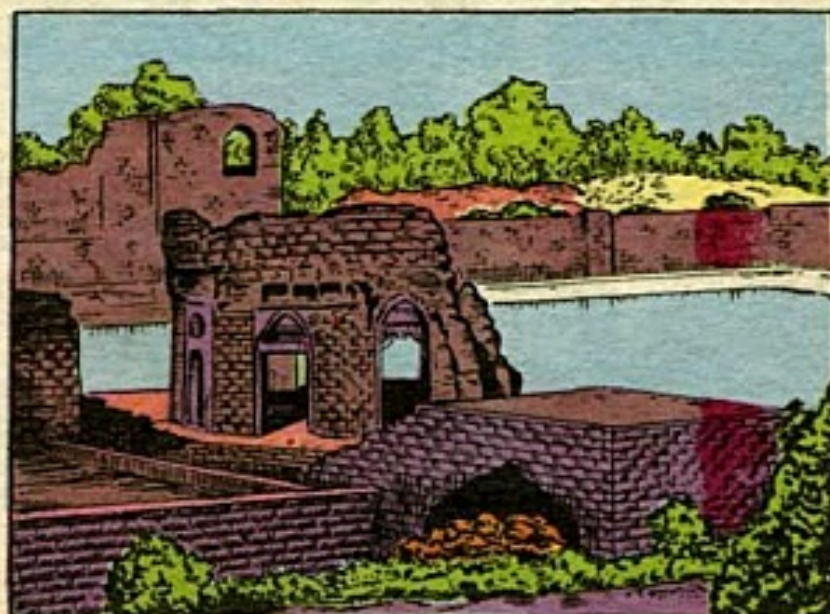
मालवा पर एक बार अकबर ने आक्रमण किया था। संगीत और रूपमती के प्रेम में डूबा बाजबहादुर उसका सामना नहीं कर सका। रूपमती ने आत्माहुति दी। रूपमती जिस महल में रहती थी, वह आज भी विद्यमान है।

कालप्रवाह के आघातों को सहकर जो महल आज भी स्थिर खड़ा हुआ है, वह 'जहाज महल' कहलाता है। रमणीय प्रकृति की गोद में प्रशांत एवं गंभीर भाव लेकर खड़ा यह महल मौन यति के सदृश प्राचीन वैभव का साक्षीरूप लगता है।

बाजबहादुर ने अपने अन्तिम दिन अकबर के दरबार में बिताये थे। अपनी अद्भुत संगीत-प्रतिभा के कारण बाजबहादुर अकबर के स्नेह का पात्र था। किन्तु बाजबहादुर न तो कभी मांडूगढ़ को भूल सका और न रूपमती को। ये दोनों सदा उसके हृदय में बसे रहे।

जादू की सीढ़ी

मलयगिरि पर राजा महीपाल का शासन था। एकबार वे राजसभा में किसी गोष्ठी का नेतृत्व कर रहे थे, तभी एक लंबी दाढ़ीवाला दीनानाथ नाम का बूढ़ा कुबड़ा एक सीढ़ी पीठ पर लादे सभा में आया और राजा को प्रणाम करके बोला, "महाराज! मेरी रक्षा कीजिए!"

"मैं अवश्य तुम्हारी रक्षा करूँगा, बताओ, तुम पर कैसी विपदा आगयी है?" राजा महीपाल ने आश्वासन देकर कहा।

बूढ़े कुबड़े दीनानाथ ने कहा, "महाराज! मैंने सारी ज़िंदगी कष्ट भोगकर जादू की यह सीढ़ी प्राप्त की है। लेकिन डाकू मानसिंह इसे हथियाना चाहता है।"

राजा महीपाल ने मलयगिरि दुर्ग के अन्दर उस वृद्ध के लिए आवास की व्यवस्था की और दो पहरेदारों को उसकी रक्षा में नियुक्त किया।

डाकू मानसिंह को जब यह ख़बर मिली, तब उसने दुर्ग के पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर दुर्ग के भीतर प्रवेश किया पर वह बूढ़े दीनानाथ की जादू की सीढ़ी को हासिल करने में सफल नहीं हो सका। उसने और कई क़ीमती चीज़ें चुरायीं और वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया।

डाकू मानसिंह की ऐसी धृष्ठता देखकर राजा महीपाल स्वयं उसे पकड़ने के लिए निकले। उन्होंने गुप्तचरों से डाकू मानसिंह के निवास-स्थान का पता लगाया और वहाँ तक पहुँचने के लिए एक पहाड़ी प्रदेश के निकट आये।

डाकू मानसिंह ने राजा महीपाल को दूर से ही आते हुए देख लिया था। उसने चरवाहे का वेश भरा और राजा के सामने पहुँच कर बोला, "महाराज, सामने जो गुफा दिखाई देरही है, उसमें रत्नों के ढेर लगे हुए हैं। मैं तो ढोर चरानेवाला एक साधारण इन्सान हूँ, उतने धन का क्या करूँगा? आप हमारे देश के राजा हैं। आपके

कमल कुमार

लिए उस धन की उपयोगिता है ।"

राजा को इस गहन वन में धन की बात सुनकर बड़ा विस्मय हुआ । वे घोड़े से उतरकर गुफा के अन्दर चले गये । डाकू मानसिंह ने भारी शिला सरकाकर गुफा के मुख को बंद कर दिया और घोड़े पर सवार होकर मलयगिरि दुर्ग की ओर निकल पड़ा।

दुर्ग में पहुँच कर डाकू मानसिंह ने राजा महीपाल के छोटे भाई अनंगपाल से भेंट की और बोला, "राजकुमार! बन में महाराज से मेरी भेंट हुई थी । उन्होंने मुझसे बताया कि उन्हें भौतिक सुखों से विरक्ति होगयी है, इसलिए वे संन्यास लेना चाहते हैं । आज से राजशासन का उत्तरदायित्व आपके कंधों पर है । मेरी बात की सत्यता का साक्षी यह घोड़ा है ।"

राजा महीपाल के घोड़े को देखते ही अनंगपाल को विश्वास होगया कि यह पशुपालक चरवाहा जो कुछ कह रहा है, सच कह रहा है । अपने राजा बनने की खुशी में अनंगपाल ने अपना कंठहार उसे उपहार में दे दिया ।

डाकू मानसिंह ने हार को उलट-पलट कर देखा, फिर बोला, "राजकुमार! ऐसा शुभ समाचार सुनाने के उपलक्ष्य में आपने मुझे यह बहुमूल्य हार भेंट किया है । पर इसके साथ यदि आप मुझे जादू की सीढ़ी भी भेंट कर दें तो मेरी मनोकामना पूरी हो जायेगी ।"

जादू की सीढ़ी की माँग सुनकर अनंगपाल के मन में संदेह उत्पन्न हुआ । उसने उस चरवाहे वेशधारी डाकू को बंदी बनाने के लिए अपने सेवकों को पुकारा, पर इस बीच डाकू वहाँ से रफू चक्कर होगया ।

डाकू को अनंगपाल पर बड़ा क्रोध आया । वह उसी क्रोधावेश में गुफा के पास पहुँचा और मुखद्वार से शिला को सरका दिया । इसके बाद उसने गुफा में प्रवेश कर राजा महीपाल से कहा, "मैंने मलयगिरि में सर्वत्र यह चर्चा सुनी थी कि आप दोनों भाई राम और लक्ष्मण के समान हैं । आप लोगों की परीक्षा लेने के लिए ही मैंने यह नाटक रचा था । आपके भाई अनंगपाल लक्ष्मण नहीं, बल्कि रावण हैं । जब मैंने उन्हें यह समाचार सुनाया कि आप संन्यासी बन गये हैं और अब वे राजा हैं, तब उन्होंने प्रसन्न होकर मुझे अपना यह कंठहार भेंट किया ।" यह कहकर डाकू ने

अनंगपाल से प्राप्त वह हार दिखाया ।

राजा महीपाल अपने क्रोध को नियंत्रण में नहीं रख सके। वे उसी समय दुर्ग में चले आये और राजमहल की ओर बढ़ने लगे । बूढ़ा दीनानाथ राजा को देखकर समझ गया कि वे अत्यन्त कुपित हैं। वह राजा के सामने आया और विनम्र स्वर में बोला, "महाराज! यदि आप मेरे निवास-स्थान पर आयेंगे तो आपको एक अद्भुत दृश्य देखने को मिलेगा ।"

अद्भुत दृश्य को देखने के विचार से राजा महीपाल वृद्ध दीनानाथ के निवास पर गये और उसके आग्रह करने पर जादू की सीढ़ी पर चढ़कर अटारी पर पहुँचे। वहाँ राजा को एक दृश्य दिखाई दिया। राजा के पिता मृत्युशैया पर पड़े हैं। उन्होंने महीपाल को अपने निकट बुलाया और अपने पास खड़े दस वर्ष की आयु के बालक अनंगपाल की ओर संकेत करके कहा, 'बेटा महीपाल! इस बात का सदा ख्याल रखना कि तुम्हारे इस छोटे भाई को कभी अपने माता-पिता की कमी का अनुभव न हो। यदि यह मूर्खतावश कभी कोई भूल भी कर बैठे, तो भी इसे क्षमा कर देना और प्यार से समझा देना !'

"तब महीपाल ने कहा, 'पिताजी, आप निश्चिंत रहिये ! मैं अपने छोटे भाई को प्राणों से भी बढ़कर प्रेम करूँगा ।'

यहीं वह दृश्य ओझल होगया । राजा महीपाल जादू की सीढ़ी से नीचे उतरे और कुबड़े दीनानाथ के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर बोले,

"आज तुम्हारे कारण मेरे छोटे भाई के प्राण बच गये । तुम जो चाहो सो माँग लो !"

"महाराज! मैं आपसे केवल इतना चाहता हूँ कि आप डाकू मानसिंह से मेरी इस जादू की सीढ़ी की रक्षा करें। इस जादू की सीढ़ी की मदद से मैं सबको शत्रुभय से मुक्त रखना चाहता हूँ और यश का भागी बनना चाहता हूँ।" वृद्ध दीनानाथ ने कहा ।

राजा महीपाल कुछ देर सोचते रहे, फिर बोले, "जादू की इस सीढ़ी की महिमा इतनी ही है न कि यह हमें शत्रु-भय से मुक्त रख सकती है। वास्तव में शत्रु-भय के बारे में सोचते रहना अपने आपमें एक निरर्थक कार्य है। तुम इसी समय मलयगिरि दुर्ग को छोड़कर निकल जाओ। तुम्हारी शत्रुरूपी समस्या स्वयं हल हो जायेगी ।"

वृद्ध दीनानाथ ने राजा से बार-बार विनती की कि उसे दुर्ग से बाहर न भेजा जाये, पर राजा ने उसकी एक न सुनी और उसे दुर्ग से निकाल दिया ।

कुबड़े दीनानाथ को राजा महीपाल पर बड़ा क्रोध आया । उसने सीढ़ी कंधे पर रखी और राजा की निंदा करता हुआ दुर्ग से चला गया । वह थोड़ी ही दूर गया था कि डाकू सामने से आ निकला और उससे जादू की सीढ़ी बलपूर्वक छीनकर जंगल में भाग गया । कुबड़ा दीनानाथ डाकू के रास्ते पर ही चल पड़ा । घने जंगल में प्रवेश करने के बाद डाकू मानसिंह ने जादू की सीढ़ी को आजमाना चाहा । उसने सीढ़ी को एक घने वृक्ष पर टिका दिया और उस पर चढ़कर ऊपर पहुँचा । वहाँ दो राजसेवक पहले से ही बैठे थे । उन्होंने डाकू मानसिंह को पकड़ लिया और बोले, "डाकू मानसिंह, आज तक तुमने अनेक अपराध किये हैं । उनके दंडस्वरूप हमारे राजा ने तुम्हें फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दिया है ।" यह कहकर उन्होंने डाकू मानसिंह के कंठ में फाँसी का फंदा डालकर उसे पेड़ पर लटका दिया । कंठ में ज्यों-ज्यों फाँसी का फंदा कसता गया, त्यों-त्यों डाकू भयकंपित होता गया । ठीक उसी समय कुबड़ा वृद्ध दीनानाथ वहाँ आ पहुँचा और उसने फाँसी का फंदा खोलकर डाकू की प्राण-रक्षा की तथा उसे ज़मीन पर लिटा दिया ।

कुछ ही देर मे डाकू होश में आगया । उसने अपने प्राणरक्षक बूढ़े की खोज में दृष्टि इधर-उधर दौड़ायी तो देखता क्या है, वह सामने ही विद्यमान है ।

डाकू दौड़कर कुबड़े दीनानाथ के पैरों में गिर पड़ा और बोला, "दादा, मुझे क्षमा कर दो ! तुमने वक़्त पर आकर मेरे प्राण बचाये । मैं जीवन भर तुम्हारा ऋणी रहूँगा ।" यह कहकर वह एक साधु मनुष्य-का जीवन बिताने का संकल्प लेकर जंगल में चला गया ।

जादू की सीढ़ी के आश्रय से डाकू मानसिंह को पकड़ने की राजा महीपाल की योजना पर बूढ़ा दीनानाथ बहुत प्रसन्न हुआ । उसने जादू की वह सीढ़ी राजा को दे दी और राजा ने उसे सदा के लिए राजाश्रय प्रदान किया ।

कालिंदी के तट पर गोकुल नाम का एक बड़ा गाँव था। गोकुल अत्यन्त हरा-भरा संपत्र गाँव था। वहाँ गाय, बैल, बछड़ों के झुंड घूमा करते थे। वहाँ अधिकतर ग्वाले ही रहते थे स्त्री-पुरुष अनेक कार्यों में निमग्न रहते थे और वह गाँव सदा खुशहाल और समृद्धि से परिपूर्ण था। वसुदेव की प्रेरणा से नन्द सपरिवार उस गोकुल ग्राम में आगये। गोकुल के वृद्ध एवं अन्य सम्माननीय लोगों ने आगे बढ़कर नन्द की अगवानी की और उनका अभिनंदन किया। नन्द ने सबकी कुशल-क्षेम पूछी, प्रत्येक का नाम लेकर उससे बातचीत की। इसके बाद सबके साथ गोकुल में प्रवेश किया। वृद्धा गोपिकाओं ने नन्द के घर आकर यशोदा के लाल का जन्मोत्सव मनाया। रोहिणी भी आयीं। नन्द ने उनका स्वागत-सम्मान किया। इसप्रकार वसुदेव के पुत्र को अपना पुत्र मानकर नन्द उसका पालन करने लगे।

अब बालकृष्ण गोकुल में गोप-गोपिकाओं का प्यार पाकर बड़े होने लगे। कुछ समय बीत गया।

उधर कंस ने भ्रूणहत्या और शिशुहत्याओं के लिए अनेक राक्षसों को नियुक्त किया। इनमें पूतना राक्षसी आयु में सबसे बड़ी और अत्यन्त भयंकर थी। उसकी आकृति भीषण और स्वभाव नृशंस था। इस पूतना राक्षसी के बारे में अनेक कथाएं प्रचलित थीं सभी उसके नाम से थरति थे पूतना अपनी क्रूरता के लिए विख्यात थी। एक रात वह शिशुओं की खोज में चल पड़ी और गोपनायक नन्द की गाड़ी के नीचे माँ की बगल में

लेटे कृष्ण को देखा। बालक के मुखमंडल पर तेज दमक रहा था और वह अन्य समस्त शिशुओं से भिन्न था। इस अद्‌भुत बालक को देख पूतना ने सोचा कि शायद कंस का संहार करने के लिए पैदा हुआ बालक यही हो। कंस जैसे महाबली राजा का संहार किसी साधारण मानव से कैसे हो सकता है ?

कंस के संहारक बालक का विचार आते ही पूतना क्रोधोन्मत्त हो उठी। उसके दांत किट किटाने लगे और उसकी आंखों से अंगारे फूट निकले। उसकी भौंहें तन गयीं। माथे से पसीना छूट निकला। सांस तेज़ी से चलने लगी। उसने उस बालक को माँ के पार्श्व से झपटकर उठा लिया और अपने विष पुते स्तनों को उसके मुख में ठूंस दिया। कृष्ण बड़ी जोर से चीखे और पूतना के चुचुक को अपने दांतों से कसकर भींच लिया। इसके बाद उन्होंने अपनी शक्ति से पूतना के दूध के साथ उसकी सप्त धातुओं को भी चूंस डाला। पूतना अत्यन्त विकृत स्वर में आर्तनाद करके वहीं पर गिर पड़ी।

पूतना का भयंकर आर्तनाद सुनकर रेवड़ के सभी गोप चौंककर जाग उठे। कृष्ण का रुदन सुनकर यशोदा पहले ही जाग गयी थी, पर अपनी बगल में शिशु को न पाकर घबरा रही थी। उसने व्याकुल स्वर में नन्द को पुकारा। नन्द जब यशोदा के समीप आये, तब तक पूतना के चीत्कार से अन्य गोप भी आ पहुँचे। उन्होंने राक्षसी पूतना की लाश को देखा। उस भयंकर दानवी की गोद में कृष्ण एक छोटे पक्षी की तरह छिपे हुए दिखाई दिये।

यशोदा और नन्द अपने पुत्र को देखकर नीचे झुके और 'हा बेटा'! कहकर शिशु को तुरन्त गोद में उठा लिया।

"यह सब क्या है? यह दानवी पूतना यहाँ कैसे आयी ? जब इसने कृष्ण को उठाया, तब तुम कहाँ थीं। क्या बालक तुम्हारी बगल में नहीं था ?" नन्द ने रोषभरे स्वर में यशोदा से पूछा।

"मैंने कृष्ण को भरपेट दूध पिलाकर सुला दिया था। मशाल जल रही थी। मैं बड़ी देर तक जागती रही। बस, पल भर को ही मेरी आँख लगी थीं कि यह घटना घट गयी। यह राक्षसी कहाँ से आगयी और कृष्ण को उठा लिया, मैं कुछ नहीं जानती। पता नहीं, यह कैसी माया है?

फिर भी हमारा पुत्र इस राक्षसी के हाथों से बच गया है। हमारे बेटे की आयु अवश्य ही सहस्र वर्ष की है। यह तो हमारे लाल का पुनर्जन्म हुआ है।" यशोदा ने कहा।

कृष्ण एक भयंकर ख़तरे के मुख में जाकर सकुशल लौट आया है, यह जानकर सारे गोपालक बहुत ही प्रसन्न हुए। सबका हृदय आश्चर्य और उल्लास से उमग रहा था। उन सबने मिलकर पूतना के शव को खींचकर दूर फेंक दिया। नन्द ने अपने पुत्र को अपनी बाँहों में उठाया, उसकी दीठ उतारी और संपूर्ण हृदय से उसे आशीर्वाद दिया। सब कृष्ण की बलैया लेने लगे।

समय बीतने के साथ कृष्ण भी बढ़ने लगा।

एक दिन वसुदेव ने अपने पुरोहित गर्ग नाम के ब्राह्मण को गुप्त रूप से गोकुल में भेजा। पुरोहित शुभ मुहूर्त में गोकुल पहुँचा और रोहिणी एवं यशोदा के पुत्रों के जातकर्म संस्कार संपन्न किये। पुरोहित ने उन बालकों का नामकरण संस्कार भी किया। रोहिणी के पुत्र का नाम बलराम और यशोदा के पुत्र का नाम कृष्ण रखा गया। इसप्रकार वसुदेव परोक्ष में रहकर भी बलराम और कृष्ण के लालन के बारे में पूरी तरह सचेत थे।

नन्द ने संस्कारों को बड़ी धूमधाम से मनाया। ब्राह्मणों को बुलवाकर उन्हें षड्रसपूर्ण भोजन कराया गया और उन्हें गायों एवं वस्त्रों का दान दिया। गोकुलवासी अपने सभी मित्र-सम्बन्धियों को नन्द ने वस्त्र भेंट किये। गोपूजन हुआ और गोशाला को अलंकृत किया गया। गोपिकाओं ने
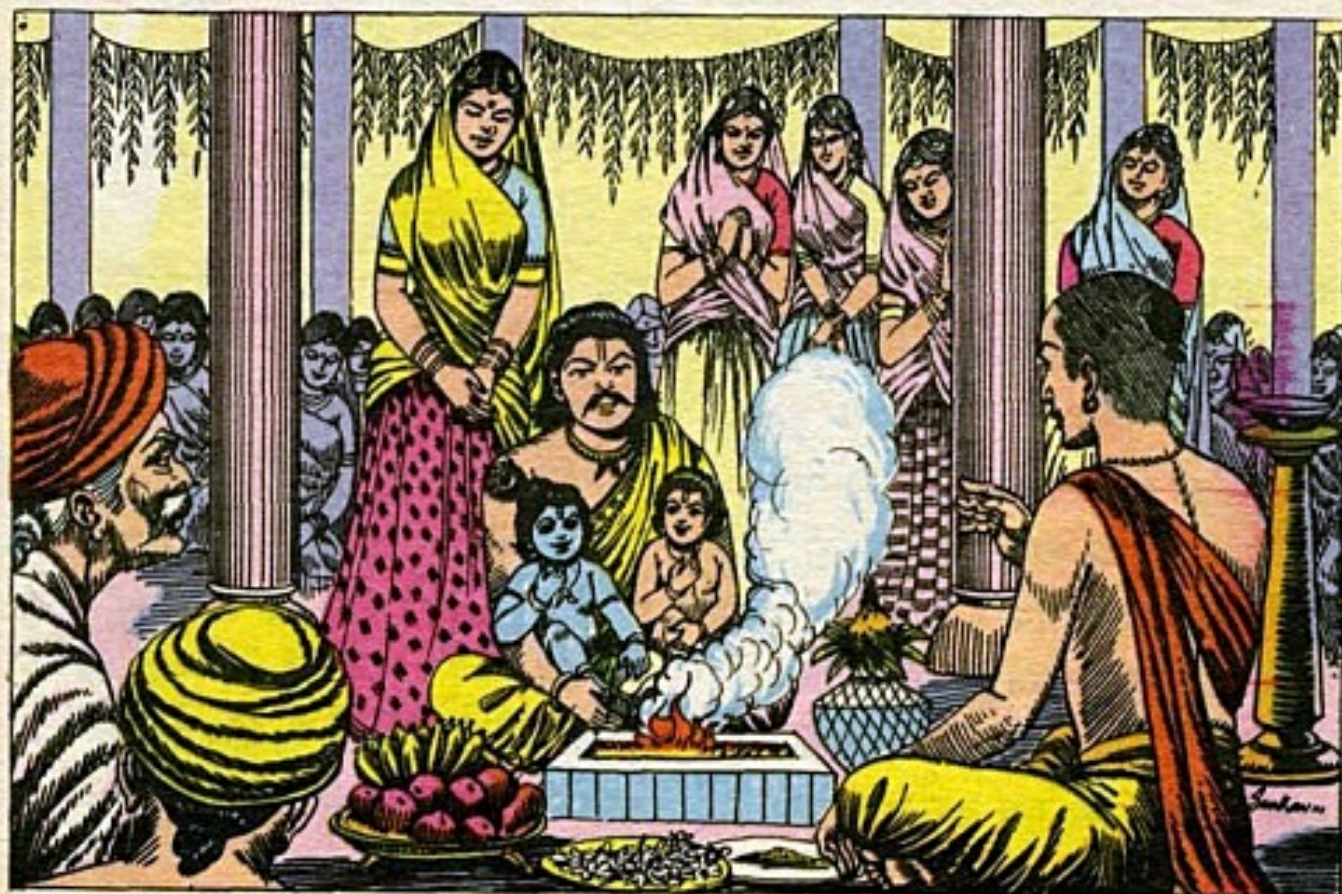
कृष्ण जैसे अद्‌भुत बालक को जन्म देने के उपलक्षय में यशोदा का अभिनंदन किया । गोपालकों ने नन्द का अभिनंदन कर उन्हें अनेक बधाइयां दीं ।

उधर मथुरा में कंस को पूतना की मृत्यु का समाचार मिला । पूतना की मृत्यु साधारण घटना नहीं थी। कंस के सेवकों एवं गुप्तचरों ने सारा समाचार उसे सविस्तार सुनाया । अब तो गोपालकों के नायक नन्द के पुत्र पर कंस का संदेह केन्दित होगया । वह उसे किसी भी प्रकार नष्ट करने का विचार करने लगा । साथ ही, उसके भीतर भय भी समा गया । उसने अपने राक्षस सेवकों को सावधान करते हुए उन्हें कड़ी चेतावनी दी । कंस ने सबको आदेश दिया कि किसी भी उपाय से कृष्ण का वध कर दिया जाये ।

कंस के सेवक राक्षसों में शकट नाम का एक असुर था । उसने अदृश्य रहते हुए कंस की गाड़ी में प्रवेश किया और ऐसे मौक़े का इन्तज़ार करने लगा, जब वह कृष्ण पर आक्रमण कर सके ।

एक दिन जब बालक कृष्ण निद्रामग्न होगये, तो यशोदा माता ने गाड़ी के नीचे बिस्तर लगाकर कृष्ण को सुला दिया । गोप लोग जिन गाड़ियों को चारे आदि के लिए प्रयोग में लाते थे, उन्हें शकट भी कहा जाता था । शकटासुर नंद के शकट में ही छिपा था । कृष्ण सो रहे थे । यशोदा अन्य गोप-नारियों के साथ स्नान करने के लिए जमुना की तरफ़ चली गयी । कुछ ही देर बाद कृष्ण जाग गये । समीप में किसी को न देखकर उन्होंने दोनों हाथ अपने मुँह में ठूंस लिये और रोने लगे । आँखों का काजल मुँह पर फैल गया । वे पैर पटक कर कुछ देर उछलते रहे । पैर पटकने की ही क्रिया में कृष्ण ने खींचकर अपनी लात शकट पर दे मारी । शकट टूट कर टुकड़े-टुकड़े होगया ।

इसी बीच यशोदा स्नान करके लौट आयी । देखा, शकट के टुकड़े-टुकड़े होगये हैं और कृष्ण वहीं पर पड़ा है । वह ज़ोर से चीत्कार कर उठी, फिर शिशु को अपनी छाती से लगाकर बोली, "हे राम! मैं तो यह सोचकर स्नान करने के लिए नदी पर चली गयी थी कि मेरा बेटा सो रहा है । पर अब यह सब देखकर पता नहीं, गोप-नायक मुझे क्या कहेंगे ? पता नहीं इस शकट की यह दुर्दशा कैसे हुई? इस बात को कौन बतायेगा ? मैं अपने पति को क्या उत्तर दूँगी ?" यह कहकर

Sankar

यशोदा ने कृष्ण को गोद में लिटा लिया और उन्हें दूध पिलाने लगी ।

इसी बीच नन्द अपने साथी गोपालकों के साथ बातचीत करते हुए वहाँ पर आ पहुँचे। हाथ में लाठी थी, वस्त्र धूल से सने हुए थे। गाड़ी से निकले पहियों एवं टूटी हुई धुरी को देखकर नंद के कंपकंपी छूट गयी। कृष्ण इस शकट के नीचे तो हमेशा सोता है । शकट इस प्रकार ध्वस्त होगया है तो कृष्ण का क्या हाल होगा ? नन्द की चिंता का पार नहीं था ।

दूसरे ही क्षण नन्द ने यशोदा एवं उसकी गोद में लेटे कृष्ण को देखा । कृष्ण बड़ी प्रफुल्ल आँखों के साथ यशोदा का मुख निहारते हुए दूध पी रहे थे। नन्द का हृदय एकदम शांत होगया। उन्हें ऐसा प्रतित हुआ मानो उनके गये हुए प्राण वापस लौट आये हैं। उन्होंने अपने वक्ष पर हाथ फेरते हुए अपनी पत्नी से कहा, "शकट की यह हालत कैसे होगयी ?" नन्द के मन में यह शंका भी थी कि शायद आंधी के कारण शकट के टुकड़े होगये हैं अथवा बैलों ने बिगड़कर अपने सींगों से इसे तोड़ डाला है। फिर नन्द ने अपने आपको सांत्वना देते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहा, "चाहे जो हो, हमारा बेटा सकुशल है ! बस, यही बड़े आनन्द की बात है ।"

यशोदा का कंठ रुद्ध होगया । वह गद्‌गद स्वर में बोली, "सारा दोष मेरा ही है। मैंने सोचा, बच्चा आराम से सो रहा है, नदी भी दूर नहीं, जल्दी से स्नान कर लौट आऊँगी—बस, मैं गोप-स्त्रियों के साथ नदी में नहाने चली गयी। लौटकर देखती हूँ तो गाड़ी टूटी हुई मिली और कृष्ण सुरक्षित। हमारा भाग्य प्रबल है कि हमारा बच्चा इतनी बड़ी मार से बच गया ।"

इतने में कुछ गोप बालक वहाँ खेलते हुए आये, बोले, "यशोदा मैया! हम लोग यहाँ पर खेल रहे थे, तब तुम्हारे कृष्ण ने पैर फैलाकर शकट पर दे मारे, जिससे शकट की यह हालत होगयी है। वाह! तुम्हारा कृष्ण तो अद्‌भुत है। हमने तो ऐसा पहले कभी नहीं देखा ।"

गोप बालकों के मुँह से यह सब सुनकर नन्द और यशोदा के आश्चर्य की सीमा न रही। दोनों ने मिट्टी लेकर बच्चे की दीठ उतारी। ऐसे अद्‌भुत कार्य करनेवाले इस शिशु को कहीं किसी की नज़र न लग जाये। नंद ने देवताओं से प्रार्थना की

कि वे सदा उनके पुत्र की रक्षा इसीप्रकार करते रहें अनेक गोप वहाँ एकत्रित होगये और सारा वृत्तान्त सुनकर अवाक रह गया। इसके बाद उन्होंने टूटे हुए शकट की मरम्मत की।

दिन बीतते गये। कृष्ण बड़े होने लगे। अब वे औंधे मुँह लेटकर चारपाई तक रेंग सकते थे। कृष्ण कभी किलकारी मारते, कभी अपने माता-पिता की उंगली पकड़ने के लिए लड़खड़ाते हुए चलते। उन्हें लोग तालियाँ बजाकर पास बुलाते। जो भी कृष्ण को देखता, गोद में ले लेता और चुमकारी लेता। कृष्ण कई बार पैंजनियां झनझनाते हुए तिरछी दृष्टि से सबको देखते हुए कहीं भागकर छिप जाते। कभी वे यशोदा की गोद में आने का बहाना कर नन्द की गोद में चले जाते-कभी नन्द के पास जाते-जाते यशोदा की गोद में चढ़ जाते। कृष्ण की इन मधुर लीलाओं को देखकर लोगों के आनन्द का ठिकाना न रहता

यशोदा कृष्ण को प्रतिदिन मक्खन खिलाती। जब वह अपने गृहकार्यों को पूरा करने के लिए जाती तो कृष्ण भी लड़खड़ाते कदमों से उसके पीछे चल देते। कृष्ण अब गोपिकाओं के घर भी जाने लगे थे। वे पैंजनिया बजाते उनके घर पहुँच जाते और खुशामद करके मक्खन मांग लेते। सारा मक्खन खा लेने पर भी वे और मक्खन खाने का हठ करते। अगर कोई गोपिका मक्खन न देती तो वे उसकी मथनी पकड़कर उसे दही न बिलोने देते। वे रुष्ट होकर उसकी वेणी खोल देते, साड़ी का आंचल पकड़कर खींच लेते। कृष्ण अपनी बाल-क्रीड़ाओं के कारण सारे गोकुल के अत्यन्त प्रिय होगये थे। सब उन्हें इतना प्रेम करते, मानो गोकुल में वे एक अकेले बालक हों।

गोपिकाएं यदि कहतीं, "कृष्ण, हम तुम्हें मक्खन खिलायेंगी, तुम थोड़ा नाचकर दिखाओ तो वे अपने घुंघरू को झंकार कर ठुमक ठुमक नाच उठते। गोपिकाएं छाछ बनाना छोड़कर कृष्ण की उन लीलाओं को देखकर तन्मय होजातीं। कृष्ण सारे दिन गोकुल के घरों में घूमते फिरते। कभी-कभी वे गोपिकाओं को इतना तंग करते कि वे उन्हें घेर लेतीं और पुकार कर कहतीं, "कृष्ण को पकड़ लो! चोर को पकड़ लो!" अंत में वे कृष्ण को यशोदा के हाथ में

सौंप आतीं। कभी-कभी गोपिकाएं उलाहना देकर यशोदा से कहतीं, "नन्द रानी! तुम अपने इस लाल को बांधकर रखा करो, वरना यह एक दिन हम सबको बांध देगा।"

समय बीतने के साथ कृष्ण की लीलाएं भी बदलती गयीं। सारे गोप बालक बलराम और कृष्ण के चारों ओर एकत्रित हो जाते। वे सब की मटकियों को उतारकर सारा मक्खन चाट जाते। पात्रों के दही और छाछ ग्वाल बालों में बांट देते। जो बच जाता उसे वे फ़र्श पर फेंककर पैरों से लुढ़का देते। कृष्ण की इन शरारतों को रोकना किसी के लिए संभव नहीं हुआ। क्षीरसागर के मंथन के बाद उसमें से निकले अमृत को जिस प्रकार मोहिनी रूपधारी भगवान ने सारे देवताओं में बांट दिया था, वैसे ही गोपों के घरों के दूध, मलाई, मक्खन को कृष्ण अपने सारे साथियों में बांट देते। छीके टूट जाते, मटकियां लुढ़क जातीं, घड़ों के दूध में छाछ मिला दिया जाता। दही में दूध, मक्खन में दही, छाछ में घी इसप्रकार कृष्ण बहुत तरह के काम करते। अंगारों पर घी डालकर उनमें चिनगारियां पैदा करते और घरों के बछड़ों को खोल देते ताकि वे गायों का दूध पी जायें। कृष्ण बहंगियों की रस्सियाँ तोड़ कर उनसे गोप बालकों के साथ खेल खेलते। हर खेल में उन्हें हरा कर उनकी पीठ पर मार लगाने की सज़ा देते। वे बालकों की पीठ पर बारी-बारी से चढ़ते और उन्हें घोड़े की तरह हांकते।

इसप्रकार बालकृष्ण अपनी चंचलताओं से गोकुल के सभी निवासियों को एक ओर तो परेशान करते, दूसरी ओर उनका मन हर लेते। कभी-कभी गोप कृष्ण की चेष्टाओं से इतने असहाय हो जाते कि उनकी कुछ भी समझ में नहीं आता कि वे क्या करें। उन्हें ऐसा लगता था कि बालकृष्ण उनका खिलौना नहीं, बल्कि वे उनका खिलौना हैं। कृष्ण के कार्य एक साधारण बालक के मनमोहक कार्य नहीं थे, बल्कि वे किसी अलौकिकता का आभास भी मिलता था। वास्तव में यह बाल कृष्ण की नहीं, बाल भगवान की लीला थी। हर खेल न केवल खेल था, बल्कि एक उपदेश भी था।

(क्रमशः)

ज्योतिष का फल

यमुनानगर पर राजा हरिकान्त का शासन था।

राजा हरिकान्त ने अनेक वर्षों तक सुख-वैभव भोगते हुए जीवन व्यतीत किया। पहली बात तो यह थी कि यमुनानगर राज्य को शत्रु का भय नहीं था। दूसरे राजा के मंत्री अत्यन्त सुयोग्य और स्वामीभक्त थे। राजा हरिकान्त पूरी तरह निश्चिंत थे।

वर्षों तक केवल खाने-पीने और बैठे रहने के कारण राजा हरिकान्त का शरीर मोटा होता चला गया। पेट हांडी की भांति फूल गया। हाथ-पैर सब थुलथुले होगये। राजा की स्थिति यहाँ तक पहुँची कि बैठकर उठना भारी होगया। चलने की शक्ति तो एकदम समाप्त होगयी।

अपनी ऐसी हालत देखकर राजा के मन में भय समा गया। जब एक कदम चलना भी असंभव होगया तो राजा को बड़ी निराशा हुई। सुन्दर, सुगठित, फुर्तीले लोगों को देखकर राजा हरिकान्त सोचते, "ये लोग कितने भाग्यशाली हैं। क्या ही अच्छा हो अगर मेरा शरीर भी ऐसा ही बन जाये!"

राजा हरिकान्त ने अपने को वर्षों तक खूब खिला-पिलाकर बढ़ाया, मोटा किया था। अब केवल सोचने मात्र से वह कैसे पतला बन सकता था? राजा ने मंत्रियों को आदेश दिया कि शरीर घटाने का कोई उपाय ढूंढ़ें। बेचारे मंत्री और क्या कर सकते थे? उन्होंने वैद्यों को बुलाकर उनसे परामर्श किया। वैद्यों ने कुछ औषधियां दीं, राजा ने उनका सेवन किया। पर केवल औषधियों से क्या हो सकता था? राजा का खान-पान पर कोई नियंत्रण नहीं था। फलस्वरूप सारी औषधियां विफल होगयीं। वैद्यों ने अपनी हार मान ली और औषधियाँ देना बंद कर दिया।

इधर वैद्यों ने अपना हाथ खींचा, उधर राजा की विकलता और बढ़ गयी। वे अपने शरीर को

२४ वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित एक कहानी

हर हालत में पतला देखने के लिए आतुर हो उठे उन्होंने अपने मंत्रियों से कहा, "कोई भी मनुष्य यदि मेरे शरीर को पतला कर दे तो मैं उसे अपना आधा राज्य देने के लिए तैयार हूँ। आप इस आशय का ढिंढोरा पिटवादें!"

सारे राज्य में राजा हरिकान्त के आदेश को प्रचारित कर दिया गया। पर मंत्रियों ने एक काम और किया। उन्होंने सोचा कि आधे राज्य के लोभ में अनेक लोग आकर राजा को परेशान करेंगे, इसलिए उन्होंने यह शर्त भी रख दी कि राजा के शरीर को पतला बनाने वाले को तो आधा राज्य दिया जायेगा, लेकिन जो अपनी चिकित्सा में असफल होगा, उसे फाँसी पर लटका दिया जायेगा। या तो मिलेगा आधा राज्य या मिलेगी मौत। इसलिए राजा की चिकित्सा के लिए किसी ने भी पहल नहीं की।

राजा हरिकान्त को और भी अधिक चिन्ता ने आ घेरा। यह उपाय भी विफल हो गया था, अब क्या किया जाये? तब एक दिन योगानन्द नाम का एक गोस्वामी संप्रदाय का मनुष्य राजमहल में आया और बोला, "मैं अपनी चिकित्सा से महाराज के शरीर की स्थूलता कम करूँगा।"

मंत्रियों ने शर्त रखी, "गोस्वामी जी, आप महाराज के लिए जिन औषधियों का प्रयोग करेंगे, आपको उनका नाम हमें बताना होगा और आप उन्हें हमारी निगरानी में तैयार करेंगे।"

"महाराज पर अब तक अनेक साधारण-असाधारण औषधियों का प्रयोग किया गया होगा। पर मेरा एक सिद्धान्त है। मैं रोगी की जन्म कुंडली का निरीक्षण किये बिना चिकित्सा आरंभ नहीं करता। आप लोग महाराज की जन्म कुंडली मंगवाइये।"

मंत्रियों ने राजा की जन्मकुंडली गोस्वामी को दी। गोस्वामी बड़ी देर तक जन्मकुंडली का निरीक्षण करता रहा, फिर बोला, "महाराज के लिए औषधियों की या अन्य किसी चिकित्सा की कोई आवश्यकता नहीं है। आज से तीस दिन के पश्चात् उनकी मृत्यु निश्चित है। उनके जीवन काल की अवधि केवल तीस दिन है।"

मंत्रियों ने प्रतिवाद करते हुए कहा, "महाराज की जन्मकुंडली आज तक अनेक लोगों ने देखी है, पर किसी ने भी यह बात नहीं बतायी। आप

झूठ बोल रहे हैं। आपको ग्रह-नक्षत्रों का कोई ज्ञान नहीं है।''

''देखिए, भवितव्यता टलती नहीं। अगर आप लोगों को मेरी बात पर विश्वास नहीं है तो आप लोग मुझे तीस दिन तक कारागार में बंद रख सकते हैं।'' योगानन्द ने कहा।

मंत्रियों ने येगानन्द की यह बात स्वीकार कर ली और उसे कारागार में बंद कर दिया। गोस्वामी के भोजन-शयन की उचित व्यवस्था कर दी गयी। योगानन्द गोस्वामी की ज्योतिष विद्या और भविष्यवाणी पर राजा हरिकान्त को पूरा विश्वास हो गया। उन्होंने सोचा कि यदि योगानन्द को अपनी विद्या पर पूर्ण विश्वास न होता तो वह इस तरह अपने को कारागार में बन्द करने के लिए तैयार नहीं हो सकता था।

अब राजा हरिकान्त को दूसरी चिंता ने आ घेरा। वे यह सोचकर रात-दिन परेशान रहने लगे कि उन्हें निश्चय ही तीस दिन बाद मृत्यु का ग्रास बनना है। उनकी यह चिंता मानसिक व्याधि के रूप में परिणत होगयी। भोजन का स्वाद नष्ट होगया। नींद अदृश्य होगयी और मनोरंजन के सारे कार्यक्रम छूट गये।

दिन भर राजा सोच में डूबे रहते और रात को करवटें बदलते। राजा की मानसिक व्याधि बढ़ती चली गयी। मंत्रियों ने राजा को अनेक प्रकार से समझाया कि गोस्वामी की बातें झूठी हैं, उसका ज्योतिष फलित नहीं होगा, पर राजा की व्याधि जटिल होती चली गयी। तीस दिन की अवधि समाप्त होने को आयी। राजा ने चारपाई पकड़ ली। उन्होंने अपने नाते-रिश्तेदारों एवं मंत्रियों

तक से बात करना बंद कर दिया ।

जैसे-तैसे दिन व्यतीत होगये । राजा सूख कर कंकाल मात्र रह गये, पर उनके प्राण न निकले।

इकत्तीसवें दिन राजा की मानसिक व्याधि इस प्रकार गायब होगयी, मानो किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी हो । राजा शैया से उठ खड़े हुए । तेज़ कदमों से मंत्रियों के पास पहुँचे और गरज कर बोले, "वह दुष्ट गोस्वामी कहाँ है? उसे कारागार से निकाल कर फाँसी पर चढ़ा दिया जाये !"

मंत्री योगानन्द गोस्वामी को कारागार से निकाल कर राजा के सामने लाये । गोस्वामी को देखते ही वे डपटकर बोले, अरे असत्यवादी! पाखंडी! तुमने झूठी भविष्यवाणी कर मुझे अपार कष्ट दिया । तुम बताओ, तुम्हें क्या दंड मिलना चाहिए ?"

योगानन्द गोस्वामी मंद-मंद मुस्कराता हुआ बोला, "दंड! महाराज, मैं सोच रहा था कि आप मुझे कोई पुरस्कार देने वाले हैं !"

"मेरी मौत की झूठी भविष्यवाणी करनेवाले तुमको मैं पुरस्कार दूँगा?" राजा ने क्रोध और विस्मय से सवाल किया ।

"महाराज! आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि मैं आपके पास आपकी चिकित्सा करने के लिए आया था, ज्योतिष बताने या भविष्यवाणी करने के लिए नहीं । मैंने आपकी चिकित्सा कर दी है और पूरी सफलता भी पायी है । आप स्वयं देख सकते हैं, आपकी चर्बी गल गयी है । आपकी देह सोने की छड़ी की भांति सीधी हो गयी है । आप न केवल चल-फिर सकते हैं, बल्कि दौड़ भी लगा सकते हैं । यह सब क्या ज्योतिषविद्या है या मेरी चिकित्सा है ?" योगानन्द ने निर्भय भाव से उत्तर दिया ।

राजा हरिकान्त को अब होश आया । वे आदमकद आइने के सामने जाकर खड़े होगये । अब वे पूर्ण स्वस्थ सुंदर साधारण मनुष्य बन गये थे । उनकी मानसिक व्याधि ने औषध का काम कर दिया था । राजा ने अपने मंत्रियों को आदेश दिया, हमारे राज्य का दक्षिण-पूर्वी पूरा प्रदेश हमारे राज्य का आधा भाग है, उसे योगानंद गोस्वामी को प्रदान किया जाये ।

एक समय की बात है तुर्की देश में बाबर नाम का एक कंगाल रहता था। वह इस हद तक दरिद्र था कि कोई उसके पास तक नहीं फटकता था। वह था तो गरीब, पर उसके अन्दर धनवान लोगों की सारी आकांक्षाएं थीं। वह अक्सर उन आकांक्षाओं को पूरा करने के सपने देखा करता था।

एक बार बाबर कहवे की दूकान के एक कोने में बैठा हुआ था। उसके मन में अचानक यह इच्छा जागृत हुई कि वह गुसलख़ाने में जाये और इस बात का अनुभव करे कि उसे कैसा सुख प्राप्त होता है।

वह सीधा गुसलख़ाने में गया और उसने अपने कपड़े खोल दिये। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वहाँ एक और व्यक्ति भी मौजूद है। कुछ लोग उस व्यक्ति को उस अजीब माहौल में भी शरबत और अन्य पेय दे रहे थे और उसकी सेवा कर रहे थे।

दरिद्र बाबर ने ग़ौर से देखा कि वह व्यक्ति उसी का प्रतिरूप है—शक्ल-सूरत, लंबाई-चौड़ाई, रंग-रूप पूरी तरह एक था। बाबर ने सोचा कि उस आदमी का स्थान उसे ग्रहण करना चाहिए। जब उस आदमी के सारे सेवक चले गये, तब मौक़ा देखकर बाबर उस आदमी के निकट आया। वह तौलिया पहने हुए था। बाबर ने उस आदमी को खींचकर पानी की टंकी में ढकेल दिया। इसके बाद वह उस आदमी का तौलिया पहन कर उसकी जगह बैठ गया।

इस बीच गुसलख़ाने के नौकर लौट आये। उन्होंने बड़े आदर सम्मान के साथ दरिद्र बाबर को नहलाया और उसे एक क़ीमती वस्त्र उढ़ाकर बाहर ले आये। उसके सेवक सुंदर क़ीमती वस्त्र लिये बाहर खड़े हुए थे। वे सब दरिद्र बाबर के पास आये और उसे अपना मालिक समझकर उसे

क़ीमती वस्त्र पहनाये। इसके बाद उन्होंने दीनारों से भरी एक भारी थैली उसके हाथ में थमा दी।

हम अपनी सुविधा के लिए दरिद्र बाबर के प्रतिरूप उस धनाढ्य आदमी का नाम चश्मशेख़ रख लेते हैं।

तो दरिद्र बाबर अमीर चश्मशेख़ बन गया। उसने अपनी थैली से तीन दीनार निकाल कर एक-एक दीनार गुसलख़ाने के नौकरों को दी। इसके बाद वह अनेक लोगों से घिरा हुआ बाहर आया।

बाहर चश्मशेख़ के लिए एक घोड़ा तैयार खड़ा था। सेवकों ने उससे निवेदन किया कि वह घोड़े पर सवार हो। अब तो दरिद्र बाबर डर के कारण काँप उठा। यदि वह घोड़े पर सवार होने से इनकार करता है तो उसकी पोल खुल जायेगी। वह चुपचाप घोड़े पर सवार होगया। घोड़ा अपनी परिचित दिशा में बढ़ने लगा।

कुछ दूर जाने के बाद घोड़ा एक भव्य महल के सामने रुका। सेवक दौड़कर आये और महल का द्वार खोल दिया। उन्होंने अपने मालिक को सहारा देकर घोड़ा से उतारा। बाबर महल के भीतर प्रविष्ट होकर चारों तरफ़ चकित दृष्टि से देखने लगा।

इस बीच सेवकों ने उससे पूछा, "मालिक, आप अपने कमरे में जायेंगे या मालकिन के भवन में ?"

"मैं अपने कमरे में ही जाऊँगा।" बाबर ने जवाब दिया।

कुछ देर बाद सेवक उसके कमरे में आये और पूछा, "मालिक, आप अपने कमरे में खाना

खायेंगे या मालकिन के भोजन कक्ष में ?"

"यहीं खाना ले आओ!" बाबर ने कहा ।

खाना समाप्त होने के बाद सेवक आया और बोला, "मालिक, समय काफ़ी बीत गया है, क्या आप मालकिन के भवन में जायेंगे ?"

"ठीक है! मैं अभी जाता हूँ ।" बाबर ने कहा ।

सेवक सलाम करके चला गया ।

बाबर की समझ में नहीं आया कि वह किस ओर जाये । वह घबरा गया । उसने कई द्वार खोलकर देखे तो उसे अन्दर के भवन में जानेवाला दरवाज़ा मिल गया । द्वार खोलते ही उसे उस भवन की मालकिन दिखाई दी । वह अत्यन्त सुंदर थी । हम अपनी सुविधा के लिए उसका नाम बेग़म पाशा रख देते हैं । बेग़म पाशा ने अपने पति को आया देखकर उठकर उसका स्वागत किया और उसके पास आयी । दरिद्र बाबर जड़वत् खड़ा रह गया । उसके पैर पत्थर के सदृश होगये । बेग़म पाशा उसे अपने साथ ले गयी और उसे अपनी बग़ल में बिठाकर उससे वार्तालाप करने लगी । इधर दरिद्र बाबर डर के मारे काँप रहा था ।

बेग़म पाशा बोली, "आप मेरी एक मुसीबत हल कर दें । परसों मेरी एक सहेली नज़मा आयी थी । वह मुझसे आपका नाम पूछने लगी । आप भरोसा करें, लाख़ सिर धुनने पर भी मुझे आपका नाम याद नहीं आया । कृपया आप मुझे अपना नाम बताने का कष्ट करें !"

अब तो दरिद्र बाबर के सामने बड़ी भारी समस्या आ खड़ी हुई । उसने बचने के लिए

बहाना करते हुए कहा, "हमने इतने दिन तक गृहस्थी चलायी है। मेरा नाम कैसे भूल गयीं ?

पर बेग़मपाशा ने ज़िद पकड़ ली और हठ करते हुए कहा, "आपको अपना नाम तो बताना ही होगा।"

बाबर घबरा गया और मनगढ़न्त नाम बोलने लगा। आख़िर यह बात खुल गयी कि वह झूठ बोल रहा है। उसने विवश होकर बेग़मपाशा के सामने सारी सच्चाई बयान कर दी। उसने कहा, "तुम मुझे माफ़ कर दो !"

"मैं तो तुम्हें माफ़ कर दूँगी, पर बादशाह कैसे माफ़ करेंगे ? मेरे पति बादशाह के यहाँ ख़ास मौलवी हैं और उन्हें रोज़ क़लमा पढ़कर सुनाते है किसी भी– समय उनके लिए बुलावा आसकता है। ऐसी हालत में तुम क्या करोगे ?" बेग़मपाशा ने पूछा।

बेग़म की बात अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि बादशाह के यहाँ से बुलावा आगया। बाबर काँप उठा और बेग़मपाशा से बोला, "तुम्हीं बताओ, अब मैं क्या करूँ ?"

बेग़म ने कहा, "बादशाह के सामने दो आसन होंगे। एक पर मोतियों का हार होगा और दूसरे पर स्वर्णहार। तुम मोतियों का हार स्वयं पहन लेना और स्वर्णहार हाथ में लेकर बादशाह से कहना—'ऐ मेरे मित्र!' और इसके बाद धर्मचर्चा शुरू कर देना।

बादशाह ने अपने सेवकों के हाथ जो वाहन भेजा था दरिद्र बाबर उस पर सवार होकर राजमहल पहुँचा और एक आसन से मोतियों का हार उठाकर उसने कंठ में पहन लिया। इसके बाद स्वर्णहार अपने हाथ में लेकर वह बोला, "ऐ मेरे मित्र!"

इसके बाद भय की कंपकंपी के कारण बाबर की नींद खुल गयी। देखा, वह कहवे की दूकान के एक कोने में बैठा है और अभी तक की सारी घटनाएं एक सपना थीं। दरिद्र बाबर को इस समय अपने चिथड़े इतने अच्छे लगे कि आनन्द के कारण उसकी आँखों से आँसू बह चले। आज उसे अपनी दरिद्रता में अत्यधिक सुख प्राप्त हुआ।

आधा मूल्य

जगमोहन रामपुर गाँव का किसान था। उसके पास दस एकड़ ज़मीन तथा फुटकर चीज़ों की एक दूकान भी थी। पर वह लोभी प्रकृति का आदमी था। गाँव के सब लोग उसकी कंजूसी से परिचित थे।

जब फ़सल की कटाई का दिन आया तो जगमोहन ने अपनी पत्नी निर्मला को दुकान पर बैठाया और स्वयं खेत-खलिहान की ओर बढ़ा। कटाई होगयी। खलिहान में धान का ढेर लग गया। यह एक ऐसा समय होता है जब हर किसान गरीबों को कुछ न कुछ दान देता है। जगमोहन की कंजूसी से तो सभी परिचित ही थे, इसलिए कोई भी गरीब उसके खलिहान की तरफ़ नहीं आया। आसपास के खलिहानों में गरीबों को दान दे रहे किसान जगमोहन की तरफ़ ताकने लगे। जगमोहन का सिर शर्म से झुक गया। उसने सोचा कि उसे भी कुछ न कुछ दान करना चाहिए और यश लूटना चाहिए। जगमोहन ने एक हिस्सा धान में बहुत बड़ा हिस्सा भूसी का मिलाकर, जिसे गांव की भाषा में पैया कहा जाता है, बच्चों को बुलाकर दान कर दिया।

कंजूस जगमोहन की दानशीलता को दूर से देख रहे बुज़ुर्ग चमनदास को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने धान लेकर जारहे बच्चों को पास बुलाया और उनका धान देखा। उसमें धान कम, पैया अधिक था। चमनदास ने बच्चों को कुछ गुपचुप समझाया और उन्हें विदा कर दिया।

कुछ समय बाद जगमोहन धान को बोरों में भरवाकर घर पहुँचा। निर्मला ने बड़ी खुशी से उसका स्वागत किया, फिर कोठरी में फैले धान की तरफ़ इशारा कर अपने पति से कहा, "अजी सुनिये! कुछ बच्चे बाज़ार में यह शोर मचाते हुए जारहे थे कि किसी धर्मात्मा ने उन्हें धान दान कर दिया है। मैंने उन्हें बुलाया और आधे मूल्य में सारा धान ख़रीद लिया।"

उस धान को देखकर जगमोहन का कलेजा काँप उठा। वह पैया मिला धान था। अपनी पत्नी की मूर्खता पर उसने सिर ठोक लिया।

दुनियादारी

राजापुर में भोलाप्रसाद नाम का एक किसान रहता था। वह अत्यन्त विवेकशील, व्यंवहारकुशल और दुनियादारी की समझ रखनेवाला इन्सान था। राजापुर के लोग ही नहीं, बल्कि आसपास के गाँवों से भी लोग कोई जटिल समस्या लेकर उसके पास आते तो वह मिनटों में ही उनका समाधान कर देता था।

एक बार उसी गाँव का एक गरीब किसान गंगानाथ भोलाप्रसाद के पास आया और बोला, "भैयाजी, मेरा घर इतना तंग और संकरा है कि उसमें हम लोगों का आना-जाना भी मुश्किल हो गया है। इस समय इससे बड़ा घर बनवाने की मेरी ताक़त नहीं है। आज कल चिनाई आदि के काम में खर्च भी बहुत होता है। ऐसा कोई उपाय बता दीजिए कि हमारा घर तंग न रहे और हम खुलकर साँस ले सकें। हमारा घर संकरा न रहकर बड़ा हो जाये।"

भोलाप्रसाद कुछ देर सोचकर बोला, "गंगानाथ, तुम घर पर बकरी एवं मुर्गी भी पालते हो न ?"

गंगानाथ ने अपने पालतू पक्षियों एवं जानवरों का ब्यौरा दिया।

तब भोलाप्रसाद ने कहा, "गंगानाथ, तुम एक काम करो! आज से एक बकरी और उसके मेमनों को भी तुम अपने घर के अन्दर बांध कर रखो। चार दिन बाद मेरे पास आकर मुझे बताना कि अब तुम्हारे घर का क्या हाल है।"

यह सलाह पाकर गंगानाथ ने खुश होकर मन ही मन सोचा कि उसकी समस्या हल होगयी है। वह दौड़ा अपने घर गया और गंगानाथ की सलाह के अनुसार एक बकरी और उसके मेमनों को घर के अन्दर बांध दिया। बकरी और मेमनों के बंध जाने से घर और संकरा हो गया। गंगानाथ के घर वालों की तो मानो साँस घुटने

राधा कुमारी

लगी। उन्हें चार दिन काटने चार युगों के सामान जान पड़े। पर भोलाप्रसाद की सलाह तो माननी ही थी।

चार दिन बाद गंगानाथ भारी मन लिये भोलाप्रसाद के घर पहुँचा और उसे अपनी व्यथा सुनायी। भोलाप्रसाद ने उसे समझाकर कहा, "गंगानाथ, तुम बिलकुल चिंता न करो! यह अनुभव तुम्हारे लिए एकदम नया है। प्रारंभ में ऐसा ही लगेगा, फिर सब कुछ एकदम ठीक हो जायेगा। आज से तुम एक जोड़ी बकरियों को और अपने घर में बांध दो! दो दिन बाद तुम मुझसे मिलने आना! समझे!" यह कहकर भोलाप्रसाद ने गंगानाथ को भेज दिया।

दो दिन बाद गंगानाथ भोलाप्रसाद के घर आया और दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करके बोला, "भैया जी, इस समय तो हमारे घर में पैर रखने तक की जगह नहीं रही। हम लोग एकदम परेशान हैं।"

भोलाप्रसाद मंद-मंद मुस्कराते हुए बोला, "गंगानाथ, तुम एक काम करो! घर में बंधी बकरियों की एक जोड़ी घर के बाहर बांध दो, फिर दो दिन बाद आकर मुझे बताओ, घर का क्या हाल है ?"

दो दिन बाद गंगानाथ भोलाप्रसाद से मिलने आया। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की हलकी-सी चमक थी। भोलाप्रसाद उसे देखकर संतुष्ट हुआ, फिर बोला, "इस बार तुम्हारा घर थोड़ा-सा बड़ा मालूम होता है न?"

"जी हाँ, आपके कहे अनुसार पहले से थोड़ा विशाल अवश्य मालूम होता है। हम, कम से

कम, साँस तो ले पाते हैं।" गंगानाथ ने कहा।

"तब एक काम करो ! बची-खुची बकरियों और उनके मेमनों को भी घर के बाहर बांध दो। थोड़े दिन बाद मुझसे मिलने आना !" भोलाप्रसाद ने कहा।

चार दिन बाद गंगानाथ भोलाप्रसाद से मिलने आया। उसने देखा, गंगानाथ का चेहरा खुशी से दमक रहा है।

"अब तुम्हारा घर कैसा है?" भोलाप्रसाद ने मंद-मंद हँसते हुए पूछा।

"भैयाजी, आपने तो मुझ पर ऐसा उपकार किया है कि मैं क्या बताऊँ? आपकी कृपा से मेरा घर अब पहले की भांति तंग और छोटा नज़र नहीं आता। खूब बड़ा मालूम होता है। मेरे घर के लोग भी खुश हैं।" यह कहकर गंगानाथ ने भोलाप्रसाद को नमस्कार किया और वहाँ से चला गया।

कुछ समय पहले कैलाश नाम का एक लड़का भोलाप्रसाद के घर नौकर बनकर आया था। वह चतुर और फुर्तीला लड़का था। उसने पहले ही दिन से गंगानाथ के साथ अपने मालिक की सलाहों को सुना था। पर वह कुछ समझ नहीं पारहा था कि छोटा घर बड़ा कैसे होगया ?

उसने विस्मित होकर अपने मालिक भोलाप्रसाद से पूछा, "मालिक, भोलानाथ ने अपना घर बड़ा तो करवाया नहीं, फिर उनके घर की तंगी कैसे दूर होगयी ? घर तो ज्योंका त्यों है, घर के सारे सदस्य भी उतने ही हैं ? मुझे तो ये गंगानाथ अत्यन्त भोले और बावरे लगते हैं। क्या सलाह मात्र से घर बड़ा हो सकता है?"

भोलाप्रसाद ने कहा, "गंगानाथ न तो भोला है, न बावरा ही। पर उसके अन्दर व्यवहार कुशलता एवं दुनियादारी का अभाव है। उसने स्वयं ही कहा कि वह बड़ा घर बनवाने की स्थिति में नहीं है। अब जो घर उसके पास है, उसी में उसे संतुष्ट रहना चाहिए था। वास्तव में, मैंने उसका घर नहीं उसकी मनोवृत्ति बदली है। घर में अधिक पशुओं के आजाने से सबको संकरेपन का और अधिक अनुभव हुआ, जब वे पशु निकल गये तो सबको अधिक खुलेपन का अनुभव हुआ। बस, मन में अन्तर आगया। बाहर कुछ नहीं बदला।"

कनखजूरे के पैर

कनखजूरे को अंग्रेज़ी में सेंटिपेड कहते हैं। सेंटिपेड का शाब्दिक अर्थ है एक सौ पैर। पर ऐसे कुछ ही कनखजूरे हैं जिनके पचास जोड़े पैर होते हैं। यूरोप में पाये जानेवाले हिमानटरम गोब्रिलिस नाम के कनखजूरों के १७३ से १७७ जोड़े तक पैर होते हैं।

विशाल हिम का टीला

१९५६ में दक्षिण प्रशांत सागर में विश्व के सबसे अधिक विशाल हिमानी टीले का पता लगाया गया है। इसका क्षेत्रफल १२,००० वर्गमील है। १९५८ में ग्रीन लैंड के उस पार अत्यन्त ऊँचे हिमानी टीले का पता लगाया गया है, जिसकी ऊँचाई ५५० फुट है।
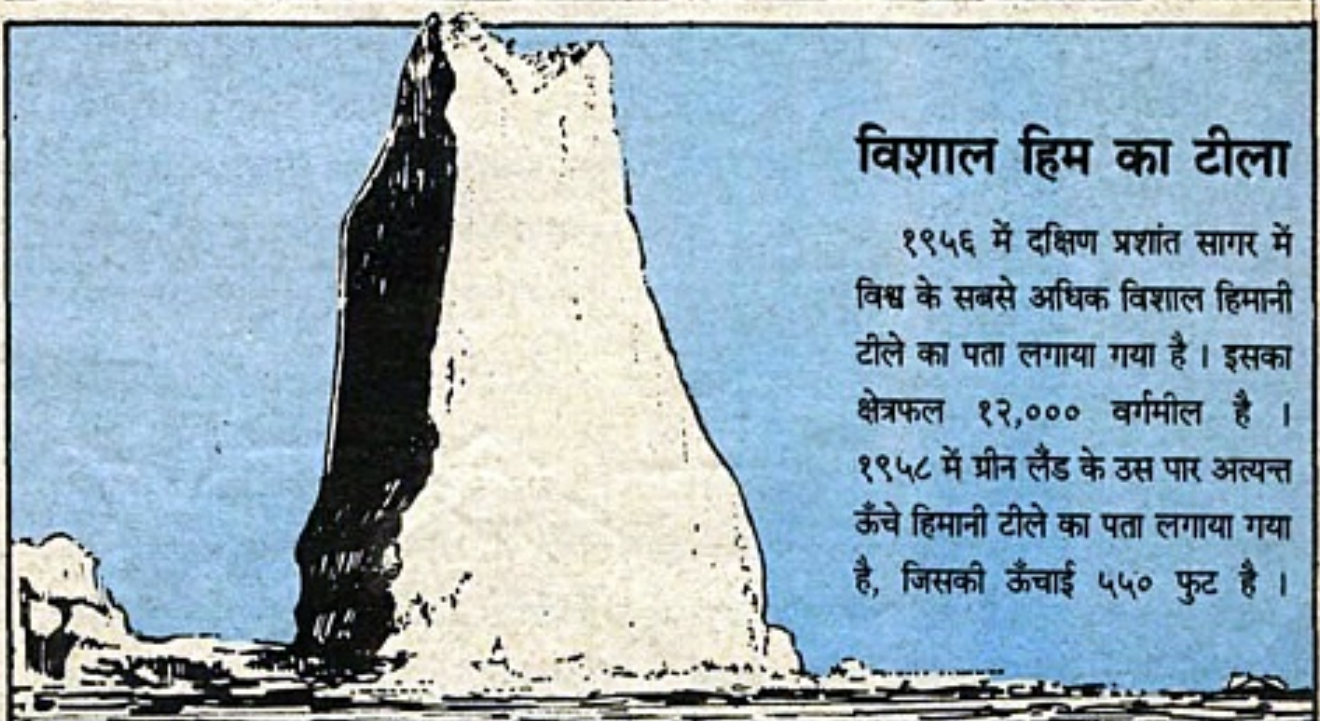
हम्मिंग बर्ड

दक्षिण अमरीका का 'हम्मिंग बर्ड' नाम का एक पक्षी प्रति क्षण ८० बार पंख फड़फड़ाता है। इसका अर्थ है कि समस्त प्राणियों की तुलना में यह कहीं अधिक बल का प्रयोग कर सकता है। यह पक्षी न केवल ऊपर की ओर, बल्कि नीचे, दायें-बायें, यहाँ तक कि पीछे की ओर भी उड़ सकता है।

मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक उत्कृष्ट मासिक पत्र

* चन्दामामा हमारे पुराण व साहित्य के श्रेष्ठ रत्नों को क्रमबद्ध रूप में प्रदान करता है ।
* व्यापक दृष्टिकोण को लेकर विश्व साहित्य की अद्भुत काव्य कथाओं को सरल भाषा में प्रस्तुत करता है ।
* मृदुहास्य, ज्ञानवर्द्धक तथा मनोरंजक सुन्दर कहानियों द्वारा पाठकों को आकृष्ट करता है ।
* हमारी पुराण गाथाओं को प्रामाणिक रूप में परिचय करता है ।
* हास्यपूर्ण प्रसंगों तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने वाले शीर्षकों के साथ पाठकों का उत्साह वर्द्धन करता है ।
* चन्दामामा केवल आपके जीवन में ही नहीं बल्कि आपके बन्धु एवं मित्रों के जीवन में भी रचनात्मक पात्र का व्यवहार करता है । इसलिए आप अपने घनिष्ट मित्रों को चन्दामामा भेंट कीजिए ! उपहार में दीजिए !

बच्चों के लिए प्रस्तुत चन्दामामा, पाठकों में नवयौवन का उत्साह एवं आनन्द प्रदान करता है ।

तेरह भाषाओं में प्रकाशित चन्दामामा का साप किसी भी भाषा का ग्राहक बन सकते हैं !

तेलुगु, तमिल, हिन्दी, अंग्रेज़ी, असामी, बंगाली, गुजराती, कन्नड, मलयालम, मराठी, उडिया, पंजाबी और संस्कृत ।

वार्षिक चन्दाः रु. ३०-००

आप किस भाषा का चन्दामामा चाहते हैं, इसका उल्लेख करते हुए निम्न लिखित पते पर अपना चन्दा भेजिएः

डाल्टन एजेन्सीस

चन्दामामा बिल्डिंग्स,

वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां फरवरी १९८८ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Ananta Desai

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ दिसम्बर १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अक्तूबर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : पानी का बहाव !

द्वितीय फोटो : धूप से बचाव !!

प्रेषक : कुशलेन्द्र दाधीच, मंदिर मार्ग, कांकरोली, जिला : उदयपुर (राज.)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३०-००

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीस, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०००२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०००२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

नयी नयी चीजें बनाइयें !

नया

कैम्लिकोल-86

आर्ट्स एन्ड क्राफ्ट्स एढेसिव

कुछ बांके-टेढ़े, छोटे-मोटे टुकड़े. कॅम्लिकॉल ८६ का एक ट्यूब और आपकी कल्पना... ये सब मिलकर साकार हो सकती है, एक दुनिया.... नयी कल्पनाएं और नये अविष्कारों की।

टूटे खिलौने या गुडियां जोडिये...

आपके अपने ३-डी ग्रीटिंग कार्ड, बंटिंग, फेस्टून, वॉल हैंगिंग, चीनी लालटेन, क्रिस्मस ट्री, मॉडल, नकाब, जापानी पंखे...

गिफ्ट रैप और पैकेजिंग....

मरम्मत फर्नीचर की और फोटो-फ्रेम, तथा अन्य घरेलू चीजों की भी!

इन सभी के लिए

बेहतरीन एढेसिव

C-HIN-2

कॅम्लिन प्रा. लि. स्टेशनरी डिविज़न, बम्बई ४०० ०५९

CHANDAMAMA